हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार 16 फरवरी 2025

10 बहादुरगढ़ में 100 स्थानों पर लग रही 350 'तीसरी आंखें'

11 बार एसोसिएशन प्रधान पद के लिए 6 अधिवक्ताओं ने ठोकी ताल

जो कहा वो किया
समाज को वापिस दिया

फीस को 50% से 70% तक कम किया
कम फीस में एक्पट्र्स से पढ़ें

30 YEARS OF ACADEMIC EXCELLENCE

YADUVANSHI GROUP OF SCHOOLS

यदुवंशी शिक्षा निकेतन

JEE Main 2025 Result

Outstanding Results Yet Again!

99.96 %ile
Nishant Sh. Karan Singh

BLOCKBUSTER RESULT

SMILES OF SUCCESS
from Yaduvanshi

Meet our Toppers

MANISH YADAV
SH. Ramkishan
99.88

DIVAY YADAV
SH. Surender Kumar
99.87

DEEPANSHU
SH. Manjeet Singh
99.69

KESHAV
SH. Dinesh Kumar
99.54

AMAN
SH. Rajesh Kumar
99.38

ANUJ
SH. Vinod Kumar
99.37

ARUN
SH. Dharam Dutt
99.28

JATIN
SH. Naresh Yadav
99.12

ABOVE 90%ile 95 Students

WE ARE PROUD OF YOU

JAI SARSWAT
SH. RAMAVTAR
98.95

VISHANT
SH. Ashok Kumar
98.82

MUSKAN GARG
SH. Rakesh
98.73

DIVYANSHU
SH. Mohan Lal
98.62

SHWET
SH. Kashmir Singh
98.48

KAPIL
SH. Dhirender Kumar
98.40

RITIKA
SH. Ved parkash
98.38

SAHIL SONI
SH. Praveen Kumar Verma
98.28

SIDHARTH
SH. Pawan Kumar
98.20

MOHIT KUMAR
SH. Mahaveer
97.97

ANUJ
SH. Rajesh Kumar
97.81

PRIYANSHI
SH. Hanuman Singh
97.69

VINIT
SH. Mr. Vikram
97.69

DIYA
SH. Devender Kumar
97.69

ANGEL
SH. Mr. Yogesh
97.54

BHAVESH KUMAR
SH. Om Prakash
97.48

MILAN GOYAL
SH. Mukesh Goyal
97.08

ANKIT DHAHIYA
SH. Manjeet Kumar
96.69

SAHIL KUMAR
SH. Anil Kumar
96.69

GAVYANSHI YADAV
SH. Vijay Singh
96.42

MILAN
SH. VIRAM SINGH
96.02

TRIPTI
SH. Mr. Sandeep Kumar
95.99

GEETIKA YADAV
SH. Dushyant Kumar Yadav
95.15

MOHIT
SH. Chanderpal
95.15

PRINCE
SH. Subhash
94.95

CHHAVIKANT
SH. MANMOHAN
94.95

DEEKSHA YADAV
SH. Subhash Chand
94.74

PIYUSH
SH. JITENDER KUMAR
94.52

YATHARTH RATN
SH. Hanumant Singh
94.24

AMAN GOYAL
SH. Bhunesh Kumar
94.16

AMAN RAJ
SH. RAJESH KUMAR YADAV
93.88

HARSH
SH. PRADEEP KUMAR
93.53

VIVEK
SH. Mr. Sunder Singh
93.37

ANUJ
SH. Anoop
93.33

RISHABH KUMAR
SH. Manoj Kumar
92.95

PURUSHOTAM S
SH. Surender Singh
92.74

KARTIK YADAV
SH. SATISH KUMAR YADAV
92.69

SHIVANI
SH. Sunil Kumar
92.12

KUNAL
SH. Arun Kumar
92.01

KUMKUM
SH. HARPAL SINGH
91.96

KALPANA
SH. Mahesh Kumar
91.91

LOKESH
SH. Hanuman
91.78

YOGESH
SH. Paramvir
91.76

NAVNEET
SH. Virender Singh
91.61

ABHIJEET
SH. Vikash
91.41

RAHUL
SH. Vijay Kumar
91.34

ARYAN
SH. Sudesh
90.88

YOGESH
SH. SURENDER
90.62

RUPESH
SH. DEEPAK
90.52

RIYA
SH. Mr. Nasib
90.41

MAYANK YADAV
SH. Shri Bhagwan
90.15

SHAKSHI
SH. Sunil Kumar
90.10

PRIYANSHU
SH. Rajesh Kumar
90.05

GARIMA
SH. Ashok Khola
90.00

RAKXIT
SH. Sandeep Kumar
90.00

& many more...

Heartiest
CONGRATULATIONS!!!

Yaduvanshi Celebrates Unprecedented Success yet again!

राव बहादुर सिंह
चेयरमैन यदुवंशी ग्रुप एवं पूर्व विधायक नांगल चौधरी

ADMISSION OPEN
For Kids to XII 2025-26

AC Hostel Facility for Boys & Girls

OUR CAMPUSES: Mahendergarh: 9466341799 | Narnaul: 9468061387 | Thanwas: 9050784050 | Dhani Mahu: 9050007943 | Jind: 9053905361 | Gurugram Sec.92 : 9053905384
Gurugram Sec.33: 9053905381 | Rewari: 8901167461 | Satnali: 9812330666 | Sohali (Rajasthan): 9991217659 | Kosli : 9053002458 | Hansi : 9053905366 | Kanina: 9053048100 | Mandola: 7027134134

Follow us:

खबर संक्षेप

गिरावड़ के खेतों से मोटर व तार चोरी

झज्जर। क्षेत्र के गांव गिरावड़ के खेतों में लगी सोलर मोटर व तार चोरी हो गई। पुलिस को दी शिकायत में किसान कृष्ण ने बताया कि उसने अपने खेत में दो हार्स पावर की मोटर लगा रखी थी। कृष्ण के अनुसार जब वह बीती तेरह फरवरी को जब वह अपने खेत में गया तो वहां उसकी मोटर व करीब अस्सी मीटर लंबी तार चोरी हो चुकी थी। उसने अपने स्तर पर साथी किसानों से मोटर के संबंध में पता भी किया लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा आज झज्जर में

झज्जर। हरियाणा सरकार में लोक निर्माण एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा रविवार को रहणिया रोड महाराजा दक्ष प्रजापति धर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगे। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया जाएगा। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों के मौजिज व्यक्ति बतौर विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल होंगे।

बहादुरगढ़ में निर्माणधीन मकान में चोरी, केस दर्ज

बहादुरगढ़। गांव पेलपा स्थित एक निर्माणधीन मकान में चोरी हो गई। मकान मालिक ने पुलिस को शिकायत दे दी है। पेलपा के निवासी प्रवीण का कहना है कि गांव की फिरनी पर वह मकान का निर्माण करा रहा है। गत 12 फरवरी की रात को मकान में बिजली की तार, शेटरिंग प्लेट, सरिये, मिस्त्रियों का सामान आदि चोरी हो गया। अपने स्तर पर जांच की लेकिन कुछ पता नहीं चला। इस शिकायत पर बादली थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बता दें कि इलाके में निर्माणधीन मकानों में चोरी की वारदात बढ़ रही है।

ग्रामीणों को किया जाएगा जागरूक

झज्जर : डीसी प्रदीप दहिया ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा म्हारा गांव-जगमग गांव योजना शुरू कर रखी हैं। जिले के अधिकांश गांवों में ग्रामीण योजना का लाभ ले रहे हैं। कुछ गांवों में जहां योजना लागू नहीं है वहां ग्रामीणों को जागरूक करते हुए योजना लागू की जाएगी। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

गांव छारा में नृत्य प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

बहादुरगढ़। गांव छारा स्थित चौधरी हरिद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में डांस ट्रेनिंग कार्यक्रम शुरू हो गया। महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में संयोजिका ज्योति की निगरानी में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यवाहक प्राचार्या अनीता दलाल ने किया। उन्होंने दीप प्रज्वलित किया और बच्चों को शुभकामनाएं दी। करीब 30 छात्र इसमें भाग ले रहे हैं। डांस टीचर रोहित से बच्चों ने लोक गीतों के लिए नृत्य के कई स्टेप्स सीखे। मंजू मलिक, मोनिका सहित तमाम स्टाफ सदस्य इस अवसर पर मौजूद रहे।

सवारियां ले जाने को लेकर परिचालक पीटा

झज्जर । निजी बस के एक परिचालक द्वारा सवारियां ले जाने को लेकर दूसरी निजी बस के चालक-परिचालक पर मारपीट करने का आरोप लगाया है। पुलिस को दी शिकायत में क्षेत्र के गांव सूरहा निवासी कर्मवीर ने बताया कि वह महम निवासी जगदीप की बस पर परिचालक की नौकरी करता है। बीती चौदह फरवरी की शाम करीब सवा छह बजे जब बस स्टैंड पर मौजूद था तो सवारियां भरने की बात को लेकर एक अन्य बस के चालक-परिचालकों से उसकी कहासुनी हो गई।

इसके बाद जब वह बस को पार्किंग में खड़ी करने के लिए जाने लगा तो बस चालक व परिचालक ने अपने अन्य साथियों को बुलाकर उसके साथ मारपीट की।

बाद में राहगीरों द्वारा उसे उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल में दाखिल कराया गया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

बहादुरगढ़ में 100 स्थानों पर लग रही 350 'तीसरी आंखें'

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

यह खबर बहादुरगढ़ के निवासियों को सुकून देने वाली है। अपना बहादुरगढ़ बहुत जल्द 'तीसरी आंख' की निगरानी में होगा। पुलिस द्वारा बहादुरगढ़ चैंबर आफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (बीसीसीआई) के सहयोग से करीब 60 स्थानों पर 150 कैमरे लगाए जा चुके हैं। पूरे शहर में करीब 100 स्थानों पर 350 कैमरे लगाए जाने की योजना है। सिटी सर्विलांस सिस्टम पूरी तरह से इंस्टॉल होने के बाद शातिर अपराधी भी पुलिस की नजरों से नहीं बच सकेगा।

- पुलिस प्रशासन ने क्षेत्र में जगह-जगह पर कैमरे लगवाने का कार्य तेज कर दिया

बीसीसीआई के सहयोग से शहरवासियों की सुरक्षा व आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से सभी भीड़ वाले सार्वजनिक स्थलों पर हाई क्वालिटी के करीब 350 सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं। पुलिस प्रशासन ने क्षेत्र में जगह-जगह पर सीसीटीवी कैमरे लगवाने का कार्य तेज कर दिया है। जल्द ही शहर में प्रमुख स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने का कार्य पूरा हो जाएगए। जिससे शहर में आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगेगा। बहादुरगढ़ के सिटी थाना में इंटीग्रेटिड कंट्रोल रूम बनाया गया है।

यहां से शहर की हर तरह की गतिविधियों पर पुलिस नजर रख सकेगी। कोई अपराध घटित होने पर पुलिस को भी आरोपियों तक पहुंचने में मदद मिलेगी। अधिकांश कैमरे आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस इनेबल्ड हैं।

ये कैमरे एएनपीआर (आटोमेटिक नंबर प्लेट रिकगनाइजेशन) तकनीक से युक्त हैं। इनमें अपराधियों के चेहरों के साथ-साथ वाहनों के नंबर तक साफ नजर आएंगे। संदिग्ध चेहरों व वाहनों को ट्रेक करने का सिस्टम भी डेवलप किया जा रहा है। इस तरह के कैमरे अब तक गुरुग्राम व करनाल जैसे शहरों में ही लगे हैं।

बीसीसीआई के सहयोग से इंस्टॉल हो रहे सिटी सर्विलांस सिस्टम से बढ़ेगी सुरक्षा

बहादुरगढ़। झज्जर मोड़ पर लगाए गए सीसीटीवी कैमरे।

जल्द प्रोजेक्ट पूरा हो जाएगा

शहर की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज की ओर से करीब 350 सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं। ये कैमरे लगाने पर करीब डेढ़ करोड़ की राशि खर्च होगी। बीसीसीआई के सदस्यों ने इस मुहिम में सहयोग देते हुए धन संग्रह किया है। जल्द ही यह प्रोजेक्ट पूरा हो जाएगा और शहर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

-नरेंद्र छिकारा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, बीसीसीआई

100 स्थानों लगाए जाएंगे

सिटी सर्विलांस सिस्टम के तहत बीसीसीआई के सहयोग से बहादुरगढ़ में करीब 100 स्थानों पर कुल 350 कैमरे लगाए जाएंगे। अब तक करीब 150 कैमरे लग चुके हैं। थाना शहर में इंटीग्रेटिड कंट्रोल रूम बनाया गया है। यहां से पुलिस तमाम तरह की गतिविधियों पर नजर रख सकेगी। अत्याधुनिक कैमरों के सहयोग से अपराधियों को पकड़ने में काफी मदद मिलेगी।

- मयंक मिश्रा, पुलिस उपायुक्त बहादुरगढ़

यहां लगाए जा रहे कैमरे

बहादुरगढ़ में किसान चौक, सेक्टर 16-17 मेन कट, वीसी होटल बराही रोड, कसार रोड पारले के पास, सांखल बराही रोड, सांखोल नाला रोड, पटेल नगर पुलिया नंबर तीन, सेक्टर-6 पुलिया नंबर एक, ओल्ड इंडस्ट्रियल एरिया सेक्टर-6, सिविल अस्पताल, मेन बाजार स्टैंडर्ड स्वीट्स, पुराना बस स्टैंड, विवेकानंद नगर, सेक्टर-9 मोड़, एमआइई भाग-1 गली नंबर-2, मामा चौक, सेक्टर-9 बाईपास नया बस स्टैंड, नजफगढ़ रोड बाईपास, अर्बन एक्सटेंशन रोड, बालौर चौक बाइपास, नयागांव चौक बाइपास, नयागांव अंडर पास बाइपास रोड, झज्जर बाइपास फ्लाईओवर, बेरी रोड बाइपास फ्लाईओवर, सेक्टर 16-17 कट बाइपास, झज्जर रोड से सराय गांव, बेरी रोड सेक्टर-2 मोड़, झज्जर रोड सेक्टर-6 व 2 मोड़, कोर्ट परिसर कट, बालौर रोड स्टेडियम मोड़, बालौर चुंगी, सेक्टर-9 चौक, बादली चुंगी, शिव चौक, पटेल नगर 66 फुटा रोड, बराही फाटक लाइनपार, पावर हाउस नाला, रेलवे चौक नाला, नाहरा नाहरी रोड नाला चौक, पररनाला चौक नाला, एमआइई भाग-बी निकट छोटूराम नगर फाटक, बामनोली निजामपुर चौक, नाहरा नाहरी रोड नाला नियर पेट्रोल पंप, गैस एजेंसी नाहरा-नाहरी रोड, सेक्टर 28-29 बराही रोड लाइनपार, जाखौदा फाटक आसौदा रोड, शक्ति नगर, छोटूराम नगर आदि स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं।

बेरी नगरपालिका चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया जारी

चेयरमैन पद के लिए पांच और पार्षद पद के लिए 21 नामांकन हुए जमा

- निकाय चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 17 फरवरी निर्धारित की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

झज्जर। नगर पालिका बेरी भवन का फाईल फोटो।

बेरी नगरपालिका चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया जारी है। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम रेणुका नांदल ने बताया कि नगर पालिका चुनाव के अंतर्गत शनिवार को पार्षद पदों के लिए 14 तथा चेयरमैन पद के लिए तीन प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र दाखिल किए है।

उन्होंने बताया कि निकाय चुनाव के तहत नामांकन प्रक्रिया के तहत अब तक चेयरमैन के लिए पांच तथा पार्षद पद के लिए कुल 21 नामांकन जमा हुए हैं। उन्होंने बताया कि शनिवार को नगर पालिका चेयरमैन पद के लिए धर्मवीर पुत्र सुखबीर, रवि पुत्र सज्जन सिंह तथा भोलेराम पुत्र बलवान सिंह ने नामांकन दाखिल किया। इसी प्रकार वार्ड नंबर एक से पार्षद पद के लिए राकेश कुमार पुत्र रामकिशन व रवींद्र पुत्र बलबीर सिंह, वार्ड नंबर दो से रवींद्र कुमार पुत्र शिव नारायण,वार्ड नंबर तीन से पूजा पत्नी सुखविन्द्र, मंजू पत्नी संदीप कुमार, ज्योति पत्नी राजसिंह, वार्ड नंबर चार से सुरेश पुत्र श्री किशन, वार्ड नंबर सात सज्जन सिंह पुत्र सतबीर, वार्ड नंबर 11 से नीतू यादव पत्नी अनिल कुमार, वार्ड नंबर 12 से रूबी पुत्री रणबीर, वार्ड नंबर 13 से अर्जुन सिंह पुत्र हेमराज तथा वार्ड नंबर 14 से निकिता पत्नी रवि, अंजू पत्नी संदीप व रितु पत्नी मंदीप ने नामांकन पत्र दाखिल किए है। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम रेणुका नांदल ने बताया कि निकाय चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 17 फरवरी निर्धारित की गई है।

नूना माजरा स्कूल की छात्राएं एनएमएमएस में चयनित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नूना माजरा की आठ छात्राओं ने नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम (एनएमएमएसएस) के तहत परीक्षा को उत्तीर्ण कर प्रदेश में नाम रोशन किया है। छात्राओं की इस उपलब्धि से उनके परिजनों और स्कूल प्रबंधन ने खुशी जताई है।इस उपलक्ष्य में गांव में एक सम्मान रैली भी निकाली गई। परीक्षा में चयनित छात्राओं को 9वीं से बारहवीं की नियमित पढ़ाई के दौरान हर महीने एक हजार छात्रवृति दी जाएगी। प्रिंसिपल पूनम मक्कड़ ने स्कूल की तरफ से सभी चयनित छात्राओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। पूनम मक्कड़ ने बताया कि राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की तरफ से यह परीक्षा आयोजित की गई थी। जिसमें नूना माजरा की आठ छात्राओं का चयन किया गया है। छात्रा मोनिषा, अदिति, दिव्या, सुनाक्षी, दीपिका, मोनिका, कनिष्का और खुशी ने विद्यालय का नाम रोशन किया है। छात्रवृति परीक्षा की तैयारी में प्रमुख योगदान देने के लिए प्राचार्या पूनम मक्कड़ सहित अन्य शिक्षकों व छात्राओं को जिला शिक्षा अधिकारी राजेश खन्ना, खंड शिक्षा अधिकारी मुन्नी सहारण, जिला निपुण संयोजक डॉ. सुदर्शन पुनिया, भारत विकास परिषद के जिला समन्वयक सतीश शर्मा, जिला गणित विशेषज्ञ विक्रम सिंह ने शुभकामनाएं दी हैं।

बहादुरगढ़: तीन जगहों पर चोरी की वारदात

बहादुरगढ़। इलाके में चोरी के मामले नहीं थम रहे। अब तीन और लोगों ने चोरी की शिकायत दी है। कहीं से मोटर चुराई गई है तो कहीं से वाहन और बैट्रियों पर हाथ साफ किया गया है। पुलिस को दी शिकायत में टीकरी कलां के निवासी प्रदीप का कहना है कि वह सेक्टर 17 स्थित एक कंपनी में काम करता है। उसने कंपनी के बाहर बाइक खड़ी की थी। रात को छुट्टी के बाद बाहर निकला तो बाइक नहीं मिली। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया। इस शिकायत पर सेक्टर 16 चौकी पुलिस ने केस दर्ज किया है। पानीपत के निवासी सियाराम का कहना है कि रोहद में आयशर कंपनी की एजेंसी है। मैं वहां पर पीडीआई इंचार्ज हूं। कंपनी का यार्ड रोहद से दहकोरा रोड पर है। गत 12 फरवरी की रात को यार्ड से किसी ने दो बस से पांच और ट्रक से एक बैट्री निकाल ली। वहीं, दुल्हेड़ा के निवासी शमशेर का कहना है कि उसके खेत से किसी ने मोटर चोरी कर ली है। बादली थाना पुलिस ने इस संबंध में जांच शुरू कर दी है।

सीबीएसई की 10वीं और 12वीं के लिए शांतिपूर्ण माहौल में बोर्ड परीक्षाएं शुरू

बहादुरगढ़। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की 10वीं और 12वीं कक्षा के लिए बोर्ड परीक्षाएं शनिवार को शुरू हो गई। विदित है कि 10वीं की बोर्ड परीक्षाएं 18 मार्च तथा 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं 4 अप्रैल तक आयोजित की जाएंगी। इस बार झज्जर जिले में 23 परीक्षा केंद्रों पर साढ़े 12 हजार विद्यार्थी परीक्षा देंगे।

दसवीं में जहां जिले के साढ़े 6 हजार छात्र परीक्षा देंगे, वहीं इस बार 12वीं के 6 हजार छात्र परीक्षा देंगे। शनिवार से शुरू हुई सीबीएसई की बोर्ड परीक्षा में 10वीं के विद्यार्थियों ने अंग्रेजी विषय का पेपर दिया। परीक्षा सुबह साढ़े 10 बजे शुरू हो गई। ऐसे में विद्यार्थी 10 बजे से पहले ही परीक्षा केंद्रों पर पहुंच गए। परीक्षा के लिए स्टूडेंट्स को कुछ खास नियमों का पालन करने की हिदायतें सीबीएसई की ओर से दी गई हैं। स्टूडेंट्स को 10 बजे तक सेंटर पर रिपोर्ट करना होगा। परीक्षा हॉल में छात्रों को सख्त अनुशासन का पालन करना होगा। परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।

इसके साथ ही किसी भी तरह का इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस ले जाना पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। परीक्षा के सकुशल संचालन के लिए इस बार झज्जर जिले के 23 विद्यालयों को केंद्र बनाया गया है। प्रवेश पत्र विद्यालय स्तर से विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए गए हैं। बिना एडमिट कार्ड परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। सीबीएसई के समन्वयक वीएन झा ने बताया कि बोर्ड परीक्षाएं शनिवार से शुरू हो गई हैं। छात्रों को सीबीएसई एडमिट कार्ड के अलावा स्कूल यूनिफॉर्म और स्कूल पहचान पत्र के साथ आना होगा। केवल अनुमेय स्टेशनरी आइटम के साथ प्रवेश मिलेगा।

सहायक शाखा डाकपाल के साथ मारपीट, डाक छीनी

झज्जर। क्षेत्र के गांव पाटौदा स्थित डाकघर से अपने साथी के साथ डाक लेकर निकल रहे सहायक शाखा डाकपाल के साथ मारपीट करने व डाक छीनने का मामला सामने आया है। पुलिस को दी शिकायत में पाटौदा गांव निवासी अमित यादव ने बताया कि वह डाक विभाग में सहायक शाखा डाकपाल के पद पर कार्यरत है। जब वह शुक्रवार की सुबह अपने साथी सहायक शाखा डाकपाल सुमित के साथ पाटौदा के डाकघर से डाक लेकर बाहर निकल रहा था तो गांव के ही व्यक्ति अमित ने उसके पैर पर मोटरसाइकिल चढ़ा दी। मोटरसाइकिल की टक्कर से वह जमीन पर गिर गया। आरोप है कि इसके बाद अमित द्वारा उसके साथ मारपीट करते हुए उसकी डाक भी छीन ली। बाद में सुमित व अन्य महिला द्वारा उसका बीच-बचाव कराया गया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है। इस संबंध में नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

पड़ोसी शख्स पर कपड़े की दुकान में आग लगाने का केस दर्ज

बहादुरगढ़। झज्जर रोड स्थित मोहन नगर में कपड़े की दुकान में आग लगने के मामले में नया मोड़ आया है। पीड़ित परिवार ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति पर जानबूझ कर आग लगाने का आरोप लगाया है। शिकायत के आधार पर सेक्टर 6 थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बच्चों की लड़ाई के बाद यह घटनाक्रम अंजाम दिए जाने की बात सामने आ रही है। हालांकि असल वजह तफ्तीश का विषय है।बिहार मूल के अशोक कुमार का कहना है कि वह फिलहाल यहां मोहन नगर में किराये पर रहता है। नीचे उसने कपड़ों की दुकान कर रखी है। गत 9 फरवरी की रात को दुकान बंद कर हम ऊपर बने कमरे में सो रहे थे। इसी दौरान हमारी दुकान में आग लग गई। दस फरवरी की अल सुबह करीब पौने चार बजे किसी राहगीर ने गेट थपथपाया तो हम बाहर निकले। इसके बाद आग लगने का पता चला। फिर आसपड़ोस के लोगों की मदद से आग बुझाने के प्रयास शुरू किए। हमने अपने स्तर पर आग लगने के कारण जानने की कोशिश की लेकिन कुछ पता नहीं चला।

बच्चों के झगड़े की रंजिश में वारदात

फिर पड़ोसियों के यहां सीसीटीवी फुटे खंगाली तो पता चला कि मोहन नगर में ही रहने वाले यूपी मूल के व्यक्ति ने यह आग लगाई है। बच्चों की झगड़े की रंजिश में उसने यह वारदात की। हमारा काफी नुकसान हुआ है। गनीमत रही कि आग ऊपर नहीं पहुंची, क्योंकि कमरे में सिलेंडर थे। आग पहुंच जाती तो जनहानि भी हो सकती थी। उधर, पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया है। युवक को काबू कर पूछताछ की जाएगी।

सरकार के खिलाफ नारेबाजी की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

झज्जर रोड स्थित मोहन नगर में कपड़े की दुकान में आग लगने के मामले में नया मोड़ आया है। पीड़ित परिवार ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति पर जानबूझ कर आग लगाने का आरोप लगाया है। शिकायत के आधार पर सेक्टर 6 थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बच्चों की लड़ाई के बाद यह घटनाक्रम अंजाम दिए जाने की बात सामने आ रही है। हालांकि असल वजह तफ्तीश का विषय है।बिहार मूल के अशोक कुमार का कहना है कि वह फिलहाल यहां मोहन नगर में किराये पर रहता है। नीचे उसने कपड़ों की दुकान कर रखी है। गत 9 फरवरी की रात को दुकान बंद कर हम ऊपर बने कमरे में सो रहे थे। इसी दौरान हमारी दुकान में आग लग गई। दस फरवरी की अल सुबह करीब पौने चार बजे किसी राहगीर ने गेट थपथपाया तो हम बाहर निकले। इसके बाद आग लगने का पता चला। फिर आसपड़ोस के लोगों की मदद से आग बुझाने के प्रयास शुरू किए। हमने अपने स्तर पर आग लगने के कारण जानने की कोशिश की लेकिन कुछ पता नहीं चला। फिर पड़ोसियों के यहां सीसीटीवी फुटे खंगाली तो पता चला कि मोहन नगर में ही रहने वाले यूपी मूल के व्यक्ति ने यह आग लगाई है। बच्चों की झगड़े की रंजिश में उसने यह वारदात की। हमारा काफी नुकसान हुआ है। गनीमत रही कि आग ऊपर नहीं पहुंची, क्योंकि कमरे में सिलेंडर थे। आग पहुंच जाती तो जनहानि भी हो सकती थी। उधर, पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया है। मामले में जांच की जा रही है। आरोपी युवक को काबू कर पूछताछ की जाएगी। जल्द से जल्द मामले को सुलझाने का प्रयास है।

हरियाणा रेसलिंग टीम नेशनल गेम्स में ओवरऑल चैंपियन बनी

- उत्तराखंड में हरियाणा के पहलवानों ने 6 स्वर्ण, 3 रजत और 5 कांस्य पदक जीते।

बहादुरगढ़। हरियाणा ने भारतीय कुश्ती में अपना दबदबा कायम रखते हुए उत्तराखंड में हुए 38वें राष्ट्रीय खेलों में भी ओवरऑल चैंपियन की ट्राफी जीत ली। नेशनल गेम्स में हरियाणा के पहलवानों ने 6 स्वर्ण पदक, 3 रजत पदक और 5 कांस्य पदक जीते। हरियाणा एमेच्योर कुश्ती संघ के महासचिव डॉ. राकेश सांगवान ने सभी विजेता पहलवानों को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। देश-दुनिया के लोग हरियाणा को अब पहलवानों की धरती के नाम से भी जानने लगे हैं। चूंकि हरियाणा के पहलवान दुनियाभर में अपनी अमिट छाप छोड़ रहे हैं। विदेशी धरती पर तिरंगे का सम्मान बढ़ा रहे हैं। अब हरियाणा की रेसलिंग टीम अपने शानदार प्रदर्शन के बदौलत उत्तराखंड में हुए नेशनल गेम्स में ओवरऑल चैंपियन बन गई। कुश्ती संघ के महासचिव डॉ. राकेश सिंह ने बताया कि हरियाणा की टीम ने 313 अंकों के साथ पहला स्थान प्राप्त किया। जबकि 245 अंकों के साथ एसएससीबी दूसरे तथा 199 अंकों के साथ दिल्ली की टीम तीसरे नंबर पर रही। साहिल ने 60 किलोग्राम ग्रीको-रोमन में स्वर्ण पदक, सुनील ने 87 किलोग्राम ग्रीको-रोमन में स्वर्ण पदक, तपस्या ने 57 किलो महिला रेसलिंग में स्वर्ण पदक, कल्पना ने 62 किलो महिला रेसलिंग में स्वर्ण पदक, राधिका ने 68 किलो महिला रेसलिंग में स्वर्ण पदक व प्रिया ने 76 किलो महिला रेसलिंग में स्वर्ण पदक जीतकर हरियाणा का नाम रोशन किया। पहलवान सुमित ने 57 किलो फ्री स्टाइल में रजत पदक, सचिन ने 86 किलो फ्री स्टाइल में रजत पदक और अनिल ने 67 किलो ग्रीको-रोमन में रजत पदक जीता है। जबकि सिद्धार्थ ने 65 किलो फ्री स्टाइल में कांस्य पदक, प्रदीप ने 97 किलो फ्री स्टाइल में कांस्य पदक, अंकुश ने 130 किलो ग्रीको-रोमन में कांस्य पदक, विनीता ने 50 किलो महिला रेसलिंग में कांस्य पदक और ज्योति ने 53 किलो महिला रेसलिंग में कांस्य पदक जीता है। राकेश कोच ने सभी विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी है।

समितियों का ऑनलाइन नवीनीकरण अनिवार्य

झज्जर। डीसी प्रदीप दहिया ने बताया कि हरियाणा समिति पंजीकरण एवं विनियमन अधिनियम 2012 के तहत पंजीकृत समितियों नए अधिनियम के अनुसार नवीनीकरण कराना होगा। उन सभी समितियों को जो सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत पंजीकृत थीं उन्हें नवीनीकरण करवाना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि सरकार की इस पहल से प्रदेश में समितियों की पारदर्शिता और सुचारू संचालन को बढ़ावा मिलेगा।

विवाह समारोह स्थल के नजदीक खड़ी मोटरसाइकिल चोरी

झज्जर। शहर के कच्चा बाबरा रोड स्थित एक विवाह समारोह स्थल के नजदीक खड़ी मोटरसाइकिल चोरी हो गई। पुलिस को दी शिकायत में खेड़ी खुम्मार निवासी नरेंद्र ने बताया कि वह बीते शुक्रवार की शाम करीब साढ़े सात बजे कच्चा बाबरा रोड स्थित एक विवाह समारोह में शामिल होने के लिए अपने दोस्त की मोटरसाइकिल लेकर आया था। उसने मोटरसाइकिल समारोह के स्थल के नजदीक गली में खड़ी की थी। इसके बाद जब रात करीब एक बजे वह समारोह से वापिस लौटा तो उसकी मोटरसाइकिल चोरी हो चुकी थी। उसने अपने स्तर पर मोटरसाइकिल तलाशने का प्रयास भी किया लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

वाहन चालक कई बार हो चुके चोटिल, बनी रहती है बड़ी दुर्घटना की संभावना

कच्चा बादली रोड पर हादसों को न्योता दे रहे टूटे सीवरेज के ढक्कन

■ दुकानदारों द्वारा डंडे पर लाल रंग का कपड़ा बांधकर राहगीरों को किया जा रहा टूटे ढक्कन के लिए आगाह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। कच्चा बादली रोड पर टूटे हुए सीवरेज के ढक्कन। फोटो :हरिभूमि

कच्चा बादली रोड पर मेन सड़क के बीचों बीच खुले सीवरेज के मेनहॉल के ढक्कन टूटने से राहगीरों व दुकानदारों को परेशानी आ रही है। सब्जी मंडी के पीछे स्थित इस सड़क पर दो जगहों पर सीवरेज के ढक्कन खुले हैं। एक सीवरेज जहां मंडी के पिछले गेट के ठीक सामने ही टूटा हुआ है वहीं दूसरा उससे कुछ कदमों के फासले पर स्थित है। दुकानदार विकास नागर, अंजीत खन्ना, संजय आदि ने बताया कि यह समस्या पिछले करीब सप्ताह भर से है। पहले मंडी के गेट के सामने वाला सीवरेज ही टूटा हुआ था जिसे लंबे समय के बाद संबंधित विभाग के कर्मचारी करीब पांच दिन पहले ही दुरुस्त करके निकले थे। उसी शाम सीवरेज पर डाला गया ढक्कन टूटा गया। दूसरा सीवरेज का ढक्कन भारी वाहनों के आवागमन के कारण टूट कर नीचे गिर गया। इस शिविर का ढक्कन नीचे गिरने के कारण उसमें लोगों के चोटिल होने का भय भी बना रहता है। यदि दुकानदारों की माने तो सीवरेज के कारण दो बार वाहन चालक भी अपना संतुलन खो बैठे है जिस कारण उनके वाहन क्षतिग्रस्त हो गए थे। रात के समय यहां दुर्घटना का अंदेशा भी बना रहता है।

भारी वाहनों का आवागमन बना परेशानी

दुकानदारों का कहना है कि यह रोड बादली के लिए जाता है। इसलिए रेवाड़ी व गुरुग्राम से बादली जाने वाले अधिकांश भारी वाहन शॉटकट अपनाते हुए रात के समय इस रोड का सहारा लेते हैं। इसके अलावा आजकल त्रिमूर्ति मंदिर से कुलदीप चौक तक जाने वाले सर्कुलर रोड पर पुलिया निर्माण के चलते रास्ता बंद है। इसलिए बादली जाने वाली रोडवेज भी यहीं से होकर निकलने लगी है। दुकानदारों के अनुसार अपने स्तर पर एक डंडा लगाकर उस पर लाल कपड़ा लगाया हुआ है ताकि आने-जाने वाले वाहन चालकों व राहगीरों का ध्यान पर उस पर चला जाए। दुकानदारों द्वारा मौखिक तौर पर संबंधित कर्मचारियों को अवगत भी कराया जा चुका है। थोड़ी दूरी पर खुले दो-दो सीवरेज के खुले ढक्कन कभी भी यहां दुर्घटना का कारण बन सकते हैं।

हैंडबॉल चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतकर बढ़ाया मान

झज्जर। सर्विसेज हैंडबाल टीम द्वारा जीती गई ट्राफी के साथ कोच अजय डबास।

झज्जर। शिक्षकों के साथ मौजूद क्रॉनिकल प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास के पूर्व विद्यार्थी एवं हैंडबाल कोच अजय डबास की अगुवाई में नेशनल गेम्स सर्विसेज हैंडबाल टीम ने स्वर्ण पदक प्राप्त कर विद्यालय, क्षेत्र व जिले का नाम रोशन किया है। एचडी ग्रुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि विद्यालय के पूर्व छात्र अजय डबास उत्तराखंड नेशनल गेम्स में सर्विसेज हैंडबाल टीम के मुख्य कोच हैं। हाल ही में संपन्न हुई नेशनल गेम्स हैंडबॉल चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतकर उन्होंने क्षेत्र का गौरव बढ़ाया है। इस उपलब्धि पर एचडी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा, हेमंत गुलिया व प्राचार्य सतबीर सिंह ने अजय डबास को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

क्रॉनिकल प्रतियोगिता के विजेता छात्र सम्मानित

झज्जर। संस्कारम स्कूल खातिवास में साइंस क्रॉनिकल प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को नकद प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया गया। संस्कारम ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने बताया कि साइंस क्रॉनिकल के अंतर्गत तीन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी जिनमें साइंस क्विज, वर्किंग मॉडल व साइंस पीपीटी शामिल रहीं। सभी प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि विज्ञान की हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। छात्र-छात्राओं में छिपी प्रतिभा को उभारने के लिए उनकी मेहनत और समर्पण को सम्मानित करना उनके लिए गर्व की बात है।

कॉलेज में जांचा छात्राओं का स्वास्थ्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। कॉलेज में छात्राओं का स्वास्थ्य जांचती व परामर्श देती डॉ. बीनू त्रिपाठी।

जसौरखेड़ी के राजकीय महिला महाविद्यालय में महिला कोष्ठ के तत्वाधान में बीएमआई कैंप एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल बहादुरगढ़ की टीम ने छात्राओं का स्वास्थ्य जांचा। महिला रोग विशेषज्ञ डॉ बीनू त्रिपाठी ने जांच उपरांत उन्हें उचित परामर्श दिया। शनिवार को जसौरखेड़ी के राजकीय महिला महाविद्यालय में आयोजित जांच शिविर में ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल की टीम ने छात्राओं के बीएमआई, खून व शुगर की जांच की। इसके उपरांत डॉ बीनू त्रिपाठी ने छात्राओं को पीसीओडी, पीसीओएस और किशोर अवस्था में होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि युवा ही देश का भविष्य हैं, इसीलिए उन्हें अपने खानपान पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। छात्राओं को वर्कप्लेस पर सेक्सुअल हैरेसमेंट से बचने के लिए जागरुक किया गया। तमाम कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई। विशेषज्ञों ने छात्राओं की समस्याओं को भी सुना और जरूरी परामर्श दिया। इन गतिविधियों कि दौरान महविद्यालय प्रभारी संदीप किराड़, महिला प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. पूनम, डॉ. सुनैना, डॉ. प्रियंका, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. सतेंद्र, अजय कुमार और डॉ. सुनील आदि उपस्थित रहे।

स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

■ बाल विवाह मुक्त भारत बनाने संबंधी शपथ दिलाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग तथा एमडीडी ऑफ इंडिया संस्था द्वारा राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बादली में माहवारी स्वच्छता एवं प्रबंधन विषय पर छात्राओं को जागरुक किया गया। इस दौरान एमडीडी ऑफ इंडिया संस्था के जिला समन्वयक मनोज कुमार, स्वास्थ्य विभाग से आशा वर्कर वीरमति व उषा ने छात्राओं को बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम तथा बाल श्रम अधिनियम बारे विस्तार से जानकारी देते हुए उन्हें बाल विवाह मुक्त भारत बनाने संबंधी शपथ दिलाई। आशा वर्कर वीरमति ने छात्राओं को मासिक धर्म प्रक्रिया की जानकारी देते हुए कहा कि इसकी शुरुआत 8 साल से 17 साल की आयु में होती है जबकि 45 से 55 सालकी आयु में माहवारी प्रक्रिया बन्द हो जाती है। उन्होंने कहा कि माहवारी एक नियमित प्रक्रिया है, इसका नियमित रूप से आना इस बात का संकेत है कि हमारा स्वास्थ्य सही है। इस मौके पर स्कूल इंचार्ज राजीव कटारिया, बिजेंद्र, सीमा, सविता, हेमलता, सुशील, सुनीता, नीलम, कीर्तिका सहित अन्य भी मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

रेलवे पार्क में बच्चों ने किया मातृ-पितृ पूजन

बहादुरगढ़। रेलवे पार्क में मातृ-पितृ पूजन करते बच्चे।

बहादुरगढ़। श्री योग वेदांत समिति द्वारा शहर के रेलवे पार्क सहित कई स्कूलों में मातृ पितृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में बाल संस्कार केंद्र व युवा सेवा संघ ने भी अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम के दौरान अभिभावक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। लाइनपार स्थित रेलवे पार्क में हुए इस कार्यक्रम में पहुंचे बच्चों ने माता-पिता को स्वच्छ आसन पर बैठाकर फूल मालाएं पहनाई, तिलक किया और हाथों में पूजा की थाली लेकर उनकी पूजा अर्चना की। उस उपरांत माता पिता ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। समिति के प्रवक्ता नवीन मल्होत्रा ने कहा कि विदेशी जीवनशैली और वेलेंटाइन डे जैसी पश्चिमी सभ्यता के नाम पर देश के बच्चे व युवा पथ भ्रमित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि भगवान गणेश अपने माता-पिता का पूजन कर प्रथम पूजनीय बने और मां-बाप ने गणेश के ललाट पर स्पर्श करके उन्हें त्रिलोचन बना दिया। भारतीय संस्कृति में ऋषि, मुनियों व महापुरुषों ने अनेक उच्च संस्कार युक्त जीवन जीने की शिक्षाएं दी हैं, जिनका हमें अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए।

दसवीं के छात्रों के लिए विदाई समारोह आयोजित

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में शिक्षकों के साथ विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। राजकीय उच्च विद्यालय जाखोदा में नौवीं कक्षा के छात्रों ने दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई। रंगोली, म्यूजिकल चेयर सहित विभिन्न गतिविधियों में बच्चों व शिक्षकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। अध्यापिका कुसुमलता, प्रेमलता, कौशल्या आदि ने बच्चों को आगामी परीक्षाओं के लिए शुभकमानाएं दी। उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मिडल स्कूल में करवाया योगाभ्यास

बहादुरगढ़। योगाभ्यास के उपरांत बच्चों को जागरुक करते जगदीश सहवाग।

बहादुरगढ़। शहर के राजकीय मिडल स्कूल काठमंडी में शनिवार को योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा निशुल्क योग-प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया। कार्यवाहक मुख्याध्यापिका अंजुला की अध्यक्षता में सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों ने भाग लिया। जगदीश सहवाग ने योगाभ्यास के उपरांत विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरुक किया। इस अवसर पर ममता, रेखा, स्वीटी, राजबाला, जगमति, कविता व सुशील कुमार आदि उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री अवार्ड के लिए आवेदन प्रक्रिया जारी

झज्जर। डीसी प्रदीप दहिया ने बताया कि देशभर में सिविल सेवकों द्वारा किए गए उत्कृष्ट और अनुकरणीय कार्यों को सम्मानित करने के लिए केंद्रीय प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग द्वारा प्रधानमंत्री उत्कृष्टता अवार्ड- 2024 प्रदान किया जाएगा। प्रधानमंत्री अवार्ड के लिए आवेदन प्रक्रिया जारी है। सभी विभागाध्यक्षों से उनके विभागों द्वारा संचालित प्रोजेक्ट्स से संबंधित निर्धारित श्रेणी में आवेदन मांगे गए हैं। ऑनलाइन आधिकारिक पोर्टल डब्ल्यूडब्ल्यूडब्लयू.पीएमअवार्डस.जीओवी.इन पर पंजीकरण करवाया जा सकता है। आवेदन की अंतिम तिथि 14 फरवरी से बढ़ाकर 21 फरवरी तक बढ़ा दी गई है।

छुड़ानी में दिव्यांगों के लिए दो दिन लगेगा कैंप

बहादुरगढ़। चंद्रभान मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा शनिवार 22 फरवरी व रविवार 23 फरवरी को गांव छुड़ानी में जिला स्तरीय कार्यक्रम होगा। ट्रस्ट के चेयरमैन सत्यपाल सिंह के अनुसार दो दिवसीय कार्यक्रम में दिव्यांगों को उनसे संबंधित उपकरण निशुल्क वितरित किए जाएंगे। इसके अलावा दिव्यांगों के लिए स्कूल एवं हॉस्टल की आधारशिला रखी जाएगी। ट्रस्ट के चेयरमैन सत्यपाल सिंह ने बताया कि उनके परिवार ने सीएमसी ट्रस्ट को 4 एकड़ जमीन दान दे रखी है। इसमें से 1 एकड़ में पार्क बनाया गया है। शेष 3 एकड़ में दिव्यांगों के लिए समर्पित स्कूल एवं हॉस्टल का निर्माण किया जाएगा। इस पर करीब 6 करोड़ रुपए खर्च होंगे। उन्होंने बताया कि छुड़ानी गांव में पहले रविवार 23 फरवरी को आयोजित होने वाले कैंप को पंजीकृत दिव्यांगों की बढ़ी संख्या देखते हुए अब दो दिन का कर दिया है। अब शनिवार 22 फरवरी और रविवार 23 फरवरी को पात्र लोगों को मौके पर ही निशुल्क उपकरण मिलेंगे। सुबह 10 से 5 बजे तक पात्र दिव्यांगों को व्हील चेयर, ट्राइसाइकिल, बैसाखी, सुनने की मशीन, हाथ पैर के अंग आदि मिलेंगे।

कैंप के बारे में जानकारी देते सत्यपाल सिंह।

बार एसोसिएशन प्रधान पद के लिए 6 अधिवक्ताओं ने ठोकी ताल

झज्जर। अपना नामांकन दाखिल कराते हुए अधिवक्ता। फोटो :हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

आगामी 28 फरवरी को होने वाले झज्जर बार एसोसिएशन के चुनावों को लेकर शुरू हुई नामांकन दाखिल प्रक्रिया के अंतिम दिन अधिवक्ता अजित सोलंकी ने प्रधान पद के लिए तथा अधिवक्ता अजय यादव ने सह सचिव पद के लिए नामांकन पत्र दाखिल किया। इसी के साथ अब प्रधान पद पर छह, उपप्रधान पद पर दो, सचिव व सह सचिव पद के लिए तीन-तीन तथा कोषाध्यक्ष पद के लिए दो अधिवक्ता चुनाव मैदान में है। बता दें कि वीरवार से शुरू हुई नामांकन प्रक्रिया के पहले दिन जहां प्रधान पद के लिए एडवोकेट भावेश यादव, उप प्रधान पद के लिए कर्मबीर सिवाच, सचिव पद के लिए बिजेंद्र सिंह रंगा, सह सचिव पद के लिए राहुल व सुधीर तथा कोषाध्यक्ष पद के लिए एडवोकेट रितेश व सुमित ने नामांकन दाखिल कराया था वहीं शुक्रवार को प्रधान पद के लिए दीपक गोयल, यशपाल सैनी, कुलभूषण भारद्वाज व अजय डागर, उपप्रधान पद के लिए संजय कहाड़ी, सचिव पद के लिए दीपक खत्री व ऋषि अहलावत ने अपना नामांकन दाखिल कराया था। चुनावों को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए गठित चुनाव अधिकारियों में राम कुंवार शर्मा, कृष्ण सुहाग, सुंदर सिंह खंडेलवाल, सुखवीर कादियान, धन सिंह सहरावत, सतीश जाखड़, राकेश, रविंद्र, कर्मबीर सहरावत, प्रवेश छिक्कारा व खुशीलाल शामिल हैं।

बहादुरगढ़। प्राचार्या, पदाधिकारियों और शिक्षकों संग पुरस्कार जीतने वाली छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली दिव्या और शिक्षा का किया सम्मान

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओं दिव्या को रंगोली व शिक्षा मिश्रा को निबंध लेखन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर चुनाव आयोग आफिस सीटीसी झज्जर की ओर से पुरस्कृत किया गया है। इन छात्राओं ने राष्ट्रीय मतदाता दविस पर राजकीय महाविद्यालय में आयोजित अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लिया था। दिव्या ने रंगोली में तीसरा तथा शिक्षा ने निबंध में दूसरा स्थान प्राप्त किया था। इनमें क्रमशः एक हजार और 1500 रुपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इन छात्राओं को महाविद्यालय के प्रधान मनीष जिंदल, उपप्रधान प्रेमचंद बंसल, जनरल सेक्रेटरी आशीष कुमार ने सम्मानित करते हुए बधाई दी। प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने छात्राओं कहा कि छात्राओं के विचारों से समाज को एक महत्वपूर्ण संदेश मिला है। उन्होंने कहा कि इन कार्यक्रमों के आयोजन से न केवल प्रतिभागियों को बल्कि समाज के हर व्यक्ति को लोकतंत्र की इस मुहिम से जुड़ने का अवसर मिल जाता है।

बहादुरगढ़। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते डॉ. संजीव कुक्कल। फोटो :हरिभूमि

विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया

बहादुरगढ़। राजकीय महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में "युवा अवस्था में स्वास्थ्य, पोषण एवं प्राथमिक उपचार" विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान में डॉ. संजीव कुक्कल ने विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवन के विभिन्न पहलुओं और आवश्यक सावधानियों के बारे में जागरूक किया। उन्होंने यह भी बताया कि हल्दी के प्रभावी अवशोषण में काली मिर्च की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यूथ रेड क्रॉस की संयोजक डॉ. मोनिका ने विद्यार्थियों को इस प्रकार के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। प्राचार्या सुमन हुड्डा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अच्छा स्वास्थ्य और तनावमुक्त जीवन भविष्य के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि आंत को दूसरा मस्तिष्क माना जाता है, इसलिए छात्रों को प्रोसेस्ड फूड से बचना चाहिए और संतुलित आहार को अपनाना चाहिए। कार्यक्रम का आयोजन महिला प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. शशि रापड़िया द्वारा किया गया। इस अवसर पर महिला प्रकोष्ठ की सदस्य हीरा रापड़िया, पूनम रानी सहित डॉ. अरुण कुमार, रीना कुमारी, जागृति व हिमांशु भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम मेपल इंडो कैनेडियन स्कूल में वार्षिक स्पोर्ट्स मीट का आयोजन

स्पोर्ट्स मीट में बच्चों ने किया प्रतिभा का प्रदर्शन

■ खेलों से न केवल शारीरिक विकास होता है, बल्कि मानसिक विकास भी होता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। ग्लास वाटर रेस में भाग लेते बच्चे। फोटो :हरिभूमि

ओमेक्स स्थित मेपल इंडो कैनेडियन स्कूल में वार्षिक स्पोर्ट्स मीट का आयोजन किया गया। इस दौरान स्कूल में अनेक खेल प्रतियोगिताएं हुई, जिनमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता का शुभारंभ स्कूल की निदेशिका डॉ. सुनीता शर्मा ने रिबन काटकर किया। डॉ. सुनीता शर्मा ने कहा कि आज के समय में पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी बच्चों को सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। खेलों से न केवल शारीरिक विकास होता है, बल्कि मानसिक विकास भी होता है। बच्चों द्वारा किए गए मार्च पास्ट से कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसके बाद खेल प्रतियोगिताएं हुई। फ्रॉग रेस, पासिंग द बॉल, 50 मीटर दौड़, 100 मीटर दौड़, ग्लास वाटर रेस, पेपर बोर्ड रेस, सैक रेस और हर्डल रेस में बच्चों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया। स्पोर्ट्स मीट का संचालन विद्यार्थी अनया और प्राची ने किया। विजेताओं में टोडलर्स से अश्नूर, स्वेशा और शौर्य रहे शामिल रहे। नर्सरी से चाहत, रेयांश रंजन और दित्य ने बाजी मारी। जेकेजी से अक्षांश, एकाक्ष व हायन श्रेष्ठ रहे। एसकेजी से ओजस तथा नवांश, ग्रेड 1 से हायन और विराट, ग्रेड 2 से दीप, वान्या और अनया, तथा ग्रेड 3 से द्रुपद व त्रिज्जल शानदार प्रदर्शन करने वालों में शामिल रहे। सभी विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

K.R. MANGALAM WORLD SCHOOL
K.R. MANGALAM
World School
Bahadurgarh
ENGAGE. LEARN. INNOVATE.
ADMISSIONS
NOW OPEN
Session 2025-26
Nursery - Grade IX & XI
(Play Group Also Available)
Ranked No. 1
INNOVATORS CATEGORY
BY TIMES SCHOOL SURVEY 2024
Unlock A BRIGHTER FUTURE
at K.R. Mangalam World School
TRANSFORMATIVE EDUCATION | EXCEPTIONAL FACILITIES | INSPIRING TEACHERS
At K.R. Mangalam World School, Bahadurgarh, we're dedicated to shaping young minds into leaders of tomorrow. Our world-class infrastructure and nurturing environment ensure every child's potential is realised.
WHY CHOOSE US?
Comprehensive Extracurricular Programmes
Global Exposure
Safe and Inclusive Campus
Cutting-Edge Technology Integration
Focus on Character Development
Proven Academic Excellence
JOIN A COMMUNITY WHERE LEARNING IS AN
ADVENTURE
9549899503
School is Open for Admissions on All Days
KRM LEGACY
40,000+ Students Studying
50,000+ Alumni Members
4,000 Faculty On Board
Best Academic Experts
Seamless Admission Process
Innovative Learning Modules
Student-Friendly Campus
Global Student Exchange Programmes
admission@krmangalambahadurgarh.com
www.krmangalambahadurgarh.com
Sector-2, Near Gauri Shankar Mandir, Bahadurgarh
G.K.- II | Vikaspuri | Kailash Colony | Paschim Vihar | Vaishali | Greater Noida | Faridabad | Gurugram | Bahadurgarh | Panipat | G.K.- I (IB) | Lucknow

बदलते दौर के साथ बदलती लाइफस्टाइल, शामिल होती टेक्नीक और नई सोच के आधार पर अलग-अलग जेनरेशन का नामकरण किया जाता रहा है। इसी सीरीज में विगत 1 जनवरी से जेनरेशन अल्फा को पछाड़कर, जेन बीटा वजूद में आया है। यह जेनरेशन अपनी पुरानी पीढ़ियों से कैसे अलग है, इसकी क्या खासियतें होंगी, जानना बहुत दिलचस्प है।

जेन अल्फा भी हुई पुरानी
आ गई जेनरेशन बीटा

{ कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम }

जेनरेशन बीटा यानी जेन बीटा का आगमन हो चुका है। विगत 31 दिसंबर 2024 को न्यू जेनरेशन की कुर्सी से जेन अल्फा को उतार दिया गया और 1 जनवरी 2025 को इस पर जेन बीटा को बैठा दिया गया। जो लोग कुछ कंफ्यूज हो रहे हों, उन्हें बता दें कि जेन बीटा एक अनुमानित पीढ़ी (हाइपोथीसियल टेक्नोजेनरेशन) है, जो 1 जनवरी 2025 से शुरू हो चुकी है और उसके पहले तक जो जेन अल्फा थी, वह भी एक अनुमानित पीढ़ी ही थी, जिसका वक्त 31 दिसंबर 2024 से खत्म हो गया।

डिफरेंट जेनरेशन का कॉन्सेप्ट

यह एक निश्चित समय अवधि के तकनीकी विकास, जीवनशैली, काम-काज, सोच और भविष्य दृष्टि को इस समय अवधि में पैदा होने वाली पीढ़ी के जरिए देखने का तरीका है। दूसरे शब्दों में यह समाजशास्त्रीय चश्मे से एक निश्चित समय अवधि और उस अवधि में पैदा हुए लोगों के जरिए दुनिया को देखने की नजर है। यह सिलसिला यूं तो पिछली सदी के 50 के दशक से ही शुरू हो गया था, जब उस दौर की नई पीढ़ी को हिप्पी या यिप्पीज के रूप में चिन्हित किया जाने लगा था। लेकिन सही मायने में 80 के दशक से यह सिलसिला शुरू हुआ, जब अलग-अलग समय अवधि को उस दौरान दुनिया में आई नई पीढ़ी के जरिए देखने की शुरुआत हुई। इसलिए इन पीढ़ियों के कृत्रिम विभाजन को इस तरह जानने और पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए कि अलग-अलग दशकों की, अलग-अलग पीढ़ियों की आखिरकार खूबियां क्या हैं? कुल मिलाकर जब इस नजरिए से हम जेन बीटा की बात करते हैं तो फिलहाल इसका मतलब यह अनुमान लगाने से है कि जेनरेशन बीटा यानी 2025 से पैदा होने वाली नई पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ियों से कैसे भिन्न होगी?

ऐसी होगी जेन बीटा

चूंकि जेनरेशन बीटा, पूरी तरह से सुपर टेक्नोलॉजी युग में पैदा हो रही है, इसलिए यह टेक्नोलॉजी में इनोवेटेड लाइफस्टाइल वाली जेनरेशन होगी। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, रोबोटिक, ऑगमेंटेड रिएलिटी/वर्चुअल रिएलिटी और लाखों तरह की स्मार्ट डिवाइसेस, इस पीढ़ी की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा होंगी। यह पहली ऐसी जेनरेशन होगी, जिसके सोचने, समझने, बर्ताव करने और समग्रता से जीवन जीने की सभी प्रक्रियाओं में टेक्नोलॉजी की भरमार होगी।

हाइपर कनेक्टेड जेनरेशन

जेन बीटा वह पीढ़ी होगी, जो लगभग पूरी दुनिया से एक साथ फिजिकल भी और वर्चुअल भी, एक ही समय पर कनेक्ट होगी। लेकिन संकट यह होगा, चूंकि इसने दोनों ही दुनियाओं को एक साथ एक ही समय में देखा है, इसलिए यह दोनों में बहुत फर्क नहीं कर पाएगी। यह पीढ़ी दोनों के साथ ही सहज होगी। साथ ही इस जेनरेशन की पहचान, किसी एक संस्कृति की न होकर मल्टी कल्चरल पीढ़ी की होगी। इंटरनेट और ग्लोबलाइजेशन के कारण न सिर्फ यह पीढ़ी, पुरानी किसी भी पीढ़ी के मुकाबले कहीं ज्यादा कल्चरल डायवर्सिटी और ग्लोबल थॉट के साथ बड़ी और खड़ी होगी बल्कि इसके लिए अपनी और पराई संस्कृति में उस तरह से फर्क कर पाना मुश्किल होगा, जैसे अब तक की पीढ़ियां करती रही हैं। इस जेनरेशन में हिंदी बोलने वाले इलाकों के युवाओं के गानों की भी पहली पसंद अमेरिकन और अफ्रीकन रैप हो सकती है और अमेरिकन यंगस्टर्स की भी पसंदीदा मिठाइयों में जलेबी और इमरती शामिल हो सकती है। क्योंकि इस नई बीटा जेनरेशन में कल्चरल अलगाव किसी भी स्तर पर उतना नहीं होगा, जैसा पहले होता रहा है।

ये भी होंगी इनकी खासियतें

यह जेनरेशन, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के व्यावहारिक दौर में पैदा होगी, उसी के साथ पलेगी-बढ़ेगी, शिक्षित होगी, हेल्थ और एंटरटेनमेंट की भागीदार भी होगी। यह जेनरेशन पिछली पीढ़ियों के मुकाबले टेक्नोलॉजी की समझ को लेकर इस तरह से अलग होगी कि पिछली पीढ़ियां, जहां नई टेक्नोलॉजी को समझने वाली थीं, वहीं यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी को बदलने वाली होगी। इस पीढ़ी का एक और बड़ा फर्क सबको दिखाई देगा, वह है इस पीढ़ी की परिवार संरचना में आया जबर्दस्त बदलाव। यह पीढ़ी पूरी तरह से डिजिटल परिवार संरचना वाली होगी। इसका पारिवारिक गठन बेहद लचीला होगा, जहां पुरानी सामाजिक संरचनाएं करीब-करीब नहीं मिलेंगी।

कह सकते हैं कि 1 जनवरी 2025 से शुरू हुई जेन बीटा, जेन अल्फा (2010 से 2024) से तो मीलों आगे होगी ही। साथ ही अपनी पूर्वज पीढ़ियों जैसे एक्स, वाई, जेड से तो यह लगभग प्रकाशवर्ष के फासले पर होगी। इसके शायद ही कोई लक्षण उन पीढ़ियों से मिलेंगे। लब्बोलुआब यह कि जेन बीटा अब तक की सबसे मॉडर्न, सबसे ज्यादा ग्लोबल और जीवनशैली के मामले में सबसे तेज रफ्तार होगी। *

एन्वॉयर्नमेंट को लेकर होगी अवेयर

कुछ दशकों पहले तक इंसान को धरती की जिस एक चीज को लेकर बेहद संवेदनहीन देखा गया था, वह पर्यावरण हुआ करता था। पिछली सदी के 50 के दशक में तो जब दूसरे विश्व युद्ध के बाद युद्ध से तहस-नहस दुनिया के पुनर्निर्माण का दौर शुरू हुआ, तो इसकी सबसे बड़ी कीमत पेड़ों, जंगलों, नदियों और समुद्र आदि को चुकानी पड़ी। दरअसल, उस समय यह संवेदना ही नहीं थी कि विकास के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, नदियों में हर तरह के गंदे और जहरीले पानी को बहाना कहीं से गलत भी है। इसी तरह समुद्र का अंधाधुंध दोहन आदि तो उस समय, विकास और प्रगति की निशानी थी। लेकिन जब इस सबकी अति हो गई तो पता चला कि इंसान ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है और फिर शुरू हुआ पर्यावरण के प्रति संवेदना जगाने का सिलसिला। लेकिन विकास और पर्यावरण विनाश के बीच वैचारिक रूप से फंसी बुनियादी पुरानी पीढ़ियां पर्यावरण के प्रति उतनी संवेदनशील नहीं हो सकती थीं, जितनी जरूरत थी। लेकिन यह जेन बीटा, पर्यावरण को लेकर बेहद संवेदनशील होगी। यह पैदा होने के साथ ही पर्यावरण के महत्व को समझने के लिए मजबूर होगी और शुरू से ही इसके अनुकूल जीवन जीने की कोशिश करेगी।

समझदारी से करनी होगी
जेन बीटा की पैरेंटिंग

टेक्नोबेस्ड लाइफस्टाइल के बढ़ते चलन की वजह से नई जेनरेशन के बच्चों की पैरेंटिंग भी किसी चैलेंज से कम नहीं है। जेन बीटा के बच्चों की पैरेंटिंग करते समय पैरेंट्स किन बातों का ध्यान रखें, आप सभी को जरूर मालूम होना चाहिए।

{ सजेशन
रजनी अरोड़ा }

इस साल की शुरुआत में मार्क मैक्रिंडल और वैज्ञानिकों द्वारा मानव जगत के इतिहास में नई पीढ़ी 'जेन-बीटा' की घोषणा की गई। यानी पहली जनवरी 2025 के बाद पैदा होने वाले बच्चों को जेन-बीटा का माना गया है। यह वो जेनरेशन है, जो हाई-टेक डिजिटल वर्ल्ड में जन्म ले रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ऑटोमेशन, रोबोटिक्स, मेटावर्स और स्मार्ट डिवाइसेज उनकी जिंदगी का मुख्य हिस्सा होंगे। हालांकि जेन-बीटा के बच्चे दूसरों से अपेक्षाकृत अधिक स्मार्ट और बुद्धिमान होंगे। फिर भी उन्हें जिंदगी के विभिन्न पहलुओं के साथ सामंजस्य बिठाने में कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है। ऐसे में निश्चय ही पैरेंट्स की जिम्मेदारी बढ़ जाएगी। उन्हें खुद अपडेट रहना होगा और पैरेंटिंग की अलग एप्रोच अपनानी होगी ताकि इन बच्चों की ओवरऑल डेवलपमेंट (शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक विकास) अच्छी तरह हो सके।

बैलेंस्ड स्क्रीन टाइमः जेन-बीटा बच्चों को छुटपन से ही डिजिटल टूल्स और स्क्रीन का एक्सपोजर मिलेगा। वर्चुअल दुनिया में ज्यादा समय बिताने से उनके शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर हो सकता है। डिजिटल ओवरलोड के कारण बच्चों में फोकस की कमी, नींद की समस्या और आंखों की थकान बढ़ सकती है। ऐसे में पैरेंट्स को टेक्नो-बाउंड्रीज तय करनी होंगी। बचपन से ही बच्चों को स्क्रीन टाइम और रियल लाइफ में बैलेंस बनाने, नियमित रूप से डिजिटल डिटॉक्स करने, नो स्क्रीन जोन का पालन करने, सोने से एक घंटे पहले स्क्रीन बंद करने जैसी हेल्दी हैबिट्स विकसित करनी होंगी। स्क्रीन का उपयोग केवल मनोरंजन के लिए न करके, सीखने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए करना होगा। दोस्तों से मिलने-जुलने, आउटडोर गेम्स खेलने और फिजिकली एक्टिव रहने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

मेंटल हेल्थ का रखना होगा ध्यानः डिजिटल टेक्नोलॉजी के एक्सपोजर के कारण जेन-बीटा के बच्चों में स्ट्रेस, एंग्जाइटी, अकेलापन जैसी मानसिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पैरेंट्स को अपने बच्चों के भावनात्मक और मानसिक स्तर पर नजर रखनी होगी। दोस्ताना और ओपन कम्युनिकेशन का रवैया अपनाना होगा ताकि बच्चे अपनी भावनाओं और समस्याओं के बारे में खुलकर बात कर सकें। मानसिक रूप से संतुलित और शांत रहने के लिए उन्हें बचपन से ही माइंडफुलनेस आधारित एक्टिविटीज करने और नियमित मेडिटेशन करना सिखाना होगा।

सोशल स्किल्स को बढ़ावा देनाः संभव है कि जेन-बीटा के बच्चों के विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वर्चुअल फ्रेंड्स ज्यादा, असल जिंदगी में कम दोस्त होंगे। एआई चैटबॉक्स जैसे ऑनलाइन कम्यूनिकेशन टूल्स का ज्यादा इस्तेमाल करने की आदत उनमें हो सकती है। एकल परिवार के बढ़ते ट्रेंड और वर्किंग पैरेंट्स द्वारा पर्याप्त समय न दे पाने के कारण जेन-बीटा बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव की कमी हो सकती है। जिसके चलते उन्हें नाते-रिश्तेदारों यहां तक कि हम उम्र बच्चों के साथ बातचीत करने, मिलने-जुलने या संबध स्थापित करने में दिक्कत आ सकती है। अकेलेपन का शिकार हो सकते हैं। इसलिए जेन-बीटा बच्चों में इमोशनल बॉन्डिंग और सोशल स्किल विकसित करने के लिए पैरेंट्स को बचपन से ही ध्यान देना होगा। न केवल रिश्तों और नैतिक मूल्य का महत्व समझाने के लिए नियमित तौर पर फैमिली टाइम बिताना होगा, बल्कि रियल वर्ल्ड में सोशल कनेक्शन बनाने को अहमियत देनी होगी। स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों, ग्रुप एक्टिविटीज, आउटडोर एक्टिविटीज करने, दूसरे बच्चों के साथ खेलने, त्योहारों, फैमिली या सोशल गैदरिंग में ज्यादा से ज्यादा शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

क्रिएटिविटी को देना होगा बढ़ावाः जेन-बीटा बच्चों के लिए नई शिक्षण तकनीकों को अपनाना और इंटरैक्टिव लर्निंग तकनीक अधिक प्रभावी होगी। मेमोरी-बेस्ड लर्निंग के बजाय कॉग्निटिव स्किल्स विकसित करनी होगी। यानी रटने की बजाय समस्या को हल करने की क्षमता बढ़ाने और बच्चों में आजीवन सीखने की आदत डालनी होगी। क्रिटिकल-थिंकिंग, प्रॉब्लम-सॉल्विंग, इनोवेशन या क्रिएटिविटी का विकास करना होगा। इसके लिए पैरेंट्स को उन्हें पजल्स, प्रोजेक्ट, दिमागी कसरत वाली एक्टिविटीज ज्यादा करानी होंगी।

डिजिटल सेफ्टी की देनी होगी जानकारीः एआई के जमाने में जेन-बीटा बच्चे को सोशल मीडिया और इंटरनेट के खतरों का सामना भी करना पड़ सकता है। जिसका असर उनकी पर्सनालिटी और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ सकता है। इससे बचाने के लिए पैरेंट्स को उन्हें सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल सिखाना होगा। उन्हें शुरू से ही साइबरबुलिंग, मिसइंफॉर्मेशन और प्राइवेसी कंसर्न जैसे ऑनलाइन खतरों के बारे में जागरूक करना होगा। पासवर्ड की सुरक्षा, अजनबियों से ऑनलाइन बात न करना, डाटा चोरी से बचाव जैसे साइबर सिक्योरिटी के बारे में जानकारी देनी होगी। *

(सर गंगा राम अस्पताल, नई दिल्ली में सीनियर साइकोलॉजिस्ट, डॉ. इमरान नूरानी से बातचीत पर आधारित)

{ गजल
डॉ. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग' }

बुरा लगता है हर मंजर

कसर छोड़ी नहीं हमने किसी की कद्रदानी में
बुरा लगता है हर मंजर जियादा बद्गुमानी में

समय से पहले मुरझाने लगीं कलियां गुलिस्तां में
नहीं महफूज है खुशबू किसी भी इत्रदानी में

हजारों लहरें इठलाती हैं बलखाती हैं मर्जी से
किनारे चाह कर भी बह नहीं पाते रवानी में

किसी की दास्तां में हम शुरू से आखिर तक थे
कहें क्या रह गए गुमनाम अपनी ही कहानी में

गुलामों के सिवा कोई नजर आया नहीं अब तक
मिला ना एक भी खुद्दार हमको राजधानी में

भरी है गंदगी पूरे शहर में इन दिनों 'नवरंग'
टिकी है सबकी उम्मीदें फकत इक रातरानी में

{ कहानी
शुभदा मिश्र }

उसके एक कान का टॉप्स कहीं गिर गया, वह खोए टॉप्स की गहरी चिंता में डूब गई। ऐसी डूबी कि कुछ और सूझ ही नहीं रहा था। एक मनोवैज्ञानिक कहानी।

मनमीत रे

मेरा जी धक से रह गया!

डॉ. सक्सेना के क्लीनिक में बैठी थी मैं। ठंड की सुबह। गर्म शॉल से स्वयं को अच्छी तरह ढंके हुए कि सिर से शॉल सरक गई। मैंने सिर फिर ठीक से ढंकना चाहा कि मेरा हाथ कान को छू गया। दाहिना कान। मुझे लगा कि कान का टॉप्स नहीं है। टॉप्स यानी कर्णफूल। मैंने कान अच्छे से टटोला। बायां कान भी टटोल लिया। बाएं में था टॉप्स। दाएं में नहीं।

तत्क्षण शॉल उतार कर देखा। झाड़कर देखा। अपनी साड़ी, ब्लाउज सब अच्छी तरह टटोल कर देखा। शायद कहीं उलझ गया हो। आस-पास देखा। सोफे के नीचे देखा। कहीं गिर गया हो। नहीं कहीं नहीं था। मरीजों से भरा हॉल। सब अपनी परेशानियों में डूबे। गंभीर माहौल। मेरी हलचलों से गंभीरता भंग होती। सो फिर से शॉल अच्छी तरह ढंक सिर झुकाकर बैठ गई। सदमे में घिरी।

कहां गिरा होगा, वह नन्हा-सा चमकीला टॉप्स। घर से निकल कर ऑटो में बैठते समय। ऑटो से उतर कर स्टेशन में। स्टेशन से प्लेटफॉर्म में, ट्रेन में। यहां रायपुर पहुंच कर ट्रेन से उतरते समय, ऑटो में बैठ यहां क्लीनिक आते समय। हर जगह, हर कदम पर तो भीड़-भाड़। हड़बोंग। गिर गया होगा, वह बटन सा छोटा। वस्तु कैसे कह दूं मैं। तिलिस्म है वह तो। अनजान चेहरों की सुंदरता बढ़ाने वाला। असुंदर चेहरों में भी सुंदरता ला दे। निश्चय ही वह किसी सिद्ध कलाकार की गढ़ी कलाकृति। हाय, कहां गया! उस एक अकेले की तो कोई कीमत भी नहीं। पता होता, कहां गिरा है, तो दूसरा भी टपका देती। किसी के काम तो आता।

अपना सदमा और उसकी अंधेरी नियति! अवसाद के काले जल में डूब गई मैं। टॉप्स मां ने दिए थे। मां के आशीर्वाद की तरह साथ लगे रहते। दुख की मारी ऐसे ही आस-पास, बाजार हाट, कहीं भी चली जाती। पर जब किसी 'शुभ मंगल' कार्यक्रम में जाना होता तो मुझे स्वयं अखरने लगता। लगता, सूने कान चेहरे को और सूना बना रहे हैं। कोई पूछ भी देती, 'कानों में कुछ पहना क्यों नहीं?' एक शरारती ने तो एक बार चर्चा ही छेड़ दी कि कानों के जेवर नारी मुखड़े के आवश्यक अंग हैं। गले में चाहे हीरे का हार पहन लो, पर कान सूना, तो हार बेकार।

अजूबाओं को छोड़ दें, तो हर धर्म, हर जाति, हर उम्र की महिलाएं कानों में कुछ न कुछ पहनती हैं, चाहे वह डॉक्टर हों, नर्स हों, पुलिस या सेना में हों, चाहे वह मंत्री ही क्यों न हों। और मेरा मन भी कहने लगा कि वाकई मुझे कान में पहनना चाहिए। मैं एक महिला आभूषण विक्रेता के पास पहुंची कि मुझे मेरी उम्र और व्यक्तित्व के अनुरूप कोई छोटा सा टॉप्स दें। ज्यादा कीमती न हो। उसने बहुत खोजकर इस टॉप्स की जोड़ी को निकाला। बटन-सा छोटा। गोल। परिधि में ज्योति बिंदु से चमकते श्वेत नग। केंद्र में दमकता लाल नगीना। आश्वस्त किया, 'सोने का नहीं है, पर सोने से कम भी नहीं है मैम।'

मैंने देखा, मां के उस खानदानी जड़ाऊ टॉप्स-सा तो नहीं ही, पर है बेचारा एक अच्छा विकल्प।

मैंने उस विकल्प को समुचित आदर दिया। कहीं जाऊं तो प्रेम से पहन लेती। इधर काफी दिनों से मैं बाहर कहीं आती-जाती नहीं थी। वजह थी, पैरों में तकलीफ। जाना जरूरी हो तो किसी को साथ लेना पड़ता। मुझे अपने आस-पास के लोग बहुत व्यस्त नजर आते। बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी। पर वे कहते, 'अकेले जाने का खतरा मत उठाइएगा, हमें खबर कर दीजिएगा।' मैं कहती, 'आप लोग बहुत व्यस्त रहते हैं।' उनका कहना होता, 'इससे क्या, हम समय निकाल लेंगे।' मैं और भी संकोच में पड़ जाती। ये अपने कारोबार से, बीवी-बच्चों से, अपने जरूरी कार्यक्रमों से समय निकालेंगे। मेरे कारण। यह ठीक नहीं। सो मैं जहां जाना जरूरी होता तो किसी को बिना बताए निकल जाती। अभी भी मैं बिना किसी को बताए चली आई थी।

डॉक्टर के पास आना बहुत जरूरी था। कारण आंखों में भीषण तकलीफ। महीने भर से धुंधला दिखने लगा था। अक्षर तो पढ़े ही न जाते। काले धब्बे दिखते। आंखों के भीतर सुई-सा चुभता रहता। सूजन अलग। स्थानीय डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। रायपुर आना पड़ा डॉक्टर सक्सेना के पास। वह प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं। मुलाकात के लिए पहले से ही समय लेना पड़ता है। लिया समय। पहुंची। मरीजों की भीड़। एक तरफ बैठ गई और मुझे घेर लिया टॉप्स के सदमे ने। 'हाय कहां पड़ा होगा बेचारा धूल गर्द खाता। कुछ आभास हो जाए तो अभी दौड़ कर ढूंढ़ लाऊं... कहां होगा...कहां', तभी नर्स ने नाम पुकारा, 'रोशन भाई।' मेरे बगल वाला मरीज उठ कर भीतर गया।

'अरे बाप, इसके बाद मेरा नंबर। मुझे तो कुछ याद ही नहीं आ रहा है डॉक्टर को क्या बताना है।' मेरे दिमाग में तो छाया हुआ है टॉप्स। टॉप्स-टॉप्स और टॉप्स। कैसे छूटे ये टॉप्स? कि जैसे मन ही बोल उठा, 'सच में किसी सहेली को साथ लाना था मुझे।' सहेली होती तो समझाती, 'अरे ऐसा कौन-सा कीमती था। दूसरा ले लेना।' नहीं समझाती तो लताड़ती जमकर, 'इतनी ठंड में मुंह अंधेरे उठकर, गाड़ी-घोड़ा पकड़ कर, गिरते-पड़ते पहुंची हो डॉक्टर के पास। डॉक्टर को यही बताने के लिए कि डॉक्टर साहब मेरा टॉप्स खो गया। ऐसा सुंदर डॉक्टर साहब... कि उसके जैसा...। मूर्ख, एक-एक मिनट कीमती है डॉक्टर का। सैकड़ों लोग लाइन में लगे हैं। भड़केंगे तुम पर। चल बता... तकलीफ कब से शुरू हुई? धुंधला दिखना कब से शुरू हुआ? सूजन कब से आई? कौन सी दवाई डाली थी? पिछले डॉक्टर का पुर्जा...?'

और मैं जल्दी-जल्दी सोचने लगी... मुझे डॉक्टर को क्या-क्या बताना है। *

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

निकट का कथा विशेषांक

लगभग दो दशक से प्रकाशित हो रही पत्रिका 'निकट' का नया अंक-40, कथा विशेषांक है। आकांक्षा पारे काशिव के अतिथि संपादन में आया यह अंक युवा, मध्य और वरिष्ठ पीढ़ी के लेखकों की कहानियों के सुंदर कोलाज जैसा है। वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया की कहानी 'मक्खन खाना घातक है' वृद्धावस्था में भी क्षुद्र आकांक्षाओं से ग्रस्त एक अध्यापक की मनोस्थिति को सामने लाती है तो राजेंद्र दानी ने 'मौत की उलटबांसी' में मृत्यु के भय का सहज और सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। प्रियंका ओम ने अपनी कहानी 'सात साल उनतीस दिन' में अपने पति की क्रूरता को सालों सहने वाली एक स्त्री के मनो-कायांतरण का चित्र उकेरा है। सुशांत सुप्रिय की कहानी 'एक उदास सिंफनी' उदासी से भरी प्रेमकथा के समानांतर कई सामाजिक विमर्श को भी सामने लाती है। अन्य सभी कहानियां भी पठनीय हैं। कुल सत्रह कहानियों के अलावा प्रियदर्शन का नाटक 'एक दिन बदलेगा संसार देखना', विगत वर्ष साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखिका हान कांग पर रश्मि भारद्वाज के लेख समेत मार्टिन जॉन और सुभाष नीरव की लघुकथाओं से यह अंक और समृद्ध हो गया है। *

पत्रिकाः निकट-40 (कहानी विशेषांक),
संपादकः कृष्ण बिहारी, **मूल्यः** 50 रुपए

कल्चरल इवेंट / धीरज बसाक

हर साल की तरह इस साल भी ताज नगरी आगरा में होने वाले भव्य ताज महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। आगामी 18 फरवरी से 2 मार्च तक चलने वाला यह सांस्कृतिक महोत्सव, इस आयोजन का 34वां संस्करण होगा। इस भव्य आयोजन की महत्ता और इस बार की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

बहुरंगी संस्कृति की छटा बिखेरता भव्य ताज महोत्सव

ताज महोत्सव न केवल आगरा या उत्तर प्रदेश बल्कि समूची भारतीय संस्कृति की विविधता को संजोता है और विश्व पटल के सामने इसे प्रस्तुत करता है। इसलिए यह भले ताज महोत्सव के नाम से जाना जाता हो, लेकिन यह वास्तव में समूची भारतीय संस्कृति का विराट महोत्सव होता है। इसमें देश भर के लोक कलाकार और संगीत मर्मज्ञों के साथ हर तरह के कला रसिक आते हैं। इस कारण ताज महोत्सव हाल के दशकों में देश की संस्कृति को सहेजने, संवारने और दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण आयोजन बन गया है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक ताज महोत्सव के दौरान यहां पर्यटन के लिए आना पसंद करते हैं। इस साल आयोजित होने वाले ताज महोत्सव की थीम है-धरोहर। जैसा कि थीम से जाहिर है, ताज महोत्सव में इस बार भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाएगा।

दशकों से हो रहा आयोजन

गौरतलब है कि ताज महोत्सव की शुरुआत 1992 में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा की गई थी और इसका उद्देश्य भारतीय कला और संस्कृति की विश्व स्तर पर छटा बिखेरने के साथ-साथ ताजमहल देखने आने के लिए देसी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करना था। इतने वर्षों के बाद कहा जा सकता है कि यह महोत्सव आयोजन के अपने उद्देश्यों में सफल साबित हुआ है।

उत्कृष्ट हस्तशिल्प की प्रदर्शनी

ताज महोत्सव देश का विरल सांस्कृतिक महोत्सव है। इसकी कुछ विशिष्ट खासियतें हैं। आगरा में निर्मित कला और शिल्प ग्राम में आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शनी भी उनमें से एक है। यहां भारत के कोने-कोने से शिल्पकार अपनी उत्कृष्ट कलाकृतियों का प्रदर्शन करने आते हैं। सहारनपुर की लकड़ी के खिलौने और विभिन्न तरह की नक्काशी की हुई वस्तुएं, खुर्जा के मिट्टी के बर्तन, लखनऊ की चिकनकारी और वाराणसी की रेशम की साड़ियां करीब-करीब हर बार इस महोत्सव के मुख्य आकर्षण की वस्तुएं होती हैं।

जुटते हैं लोक कलाकार-संगीतज्ञ

ताज महोत्सव में देश भर के लोक कलाकार और शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। इससे महोत्सव की शोभा और भी बढ़ती है। इसे देखने का आनंद लेने के लिए देश-दुनिया से बड़ी संख्या में कला और संगीत के कद्रदान यहां आते हैं। ताज महोत्सव वास्तव में भारत की विविध संस्कृतियों का अद्भुत संगम है।

पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद

कला और संगीत के साथ-साथ ताज महोत्सव, अपने लजीज व्यंजनों के प्रदर्शन के लिए भी जाना जाता है। इस महोत्सव में करीब-करीब सभी राज्यों के पारंपरिक व्यंजनों के स्टॉल लगाए जाते हैं, जहां महोत्सव में आए आगंतुक तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद लेकर आनंदित होते हैं।

इस बार होगा काफी कुछ नया

इस बार का ताज महोत्सव कई नए कार्यक्रमों के साथ होगा, जो इसे पिछले वर्षों के मुकाबले और अधिक रोमांचक और दर्शनीय बनाएंगे। इस महोत्सव में पहली बार इस साल बर्ड फेस्टिवल का आयोजन किया जाएगा। हॉट एयर बैलून शो भी इस महोत्सव का हिस्सा होगा। इसके अलावा ड्रोन शो, विंटेज कार रैली और पतंग महोत्सव का आयोजन भी इस बार इस महोत्सव में चार चांद लगाएंगे। पिछले कई सालों से इस महोत्सव में एक साहित्य कोना की भी जरूरत महसूस की जा रही थी। इस साल इस महोत्सव में साहित्य प्रेमियों के लिए भी विशेष कार्यक्रम होंगे। इस महोत्सव का एक बड़ा आकर्षण बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर भी होंगे, जो ओपेन स्पेस मंच पर अपनी सुरीली प्रस्तुति देंगे। सदर बाजार ओपेन स्पेस मंच, यमुना व्यू प्वाइंट, ताज व्यू गार्डन और आई लव सेल्फी प्वाइंट जैसे स्थानों पर भी इस बार महोत्सव के विभिन्न आयोजन संपन्न होंगे। हाल के सालों को देखें तो इस साल का ताज महोत्सव पहले से कहीं ज्यादा भव्य और कहीं ज्यादा विराट आयोजन होगा।

बड़ी संख्या में आते हैं पर्यटक

हाल के सालों में ताज महोत्सव के दौरान यहां पूरे साल में सबसे ज्यादा पर्यटक आते हैं। सच बात तो यह है कि पर्यटकों की भारी आवक को देखते हुए ही इस जश्न को अब पूरे 10 दिन मनाते हैं। पहले यह 10 दिनों तक चलने वाला महोत्सव नहीं होता था। लेकिन इसकी मांग जिस तरह से देशी-विदेशी पर्यटकों के बीच बढ़ी है, उस कारण यह महोत्सव देश की समृद्ध संस्कृति का पर्याय तो बन ही गया है, आगरा शहर की अर्थव्यवस्था का बड़ा स्रोत भी बनकर उभरा है। माना जाता है कि ताज महोत्सव के दौरान यहां बड़ी संख्या में देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों से आगरा शहर की आय में भारी वृद्धि होती है। *

तैयार है आयोजन स्थल

हर साल इस महोत्सव के लिए कई महीनों पहले ही भाग लेने वाले कलाकारों का चयन कर लिया जाता है और वे महोत्सव शुरू होने के पहले ही आयोजन स्थल शिल्पग्राम में पहुंचने लगते हैं। इस बार के ताज महोत्सव का आयोजन शिल्पग्राम के साथ-साथ ताज खेमा, ग्यारह सीढ़ी पार्क और फतेहपुर सीकरी सहित कई जगहों पर आयोजित होगा। जिलाधिकारी अरविंद मल्लप्पा बंगारी के मुताबिक आयोजन की सारी तैयारियों को पूरा कर लिया गया है। महोत्सव के दौरान हर तरह की सुरक्षा की चाकचौबंद व्यवस्था का इंतजाम भी किया जा चुका है।

चाहे आप किसी भी सेक्टर/कंपनी में जॉब करते हों, प्रमोशन और इंक्रीमेंट के लिए हार्ड वर्क के साथ-साथ और भी कई बातें मायने रखती हैं। कौन-सी हैं वो बातें, आप जरूर जानना चाहेंगे।

हार्ड वर्क + स्मार्ट स्ट्रेटजी ईजिली मिलेगा प्रमोशन

सेल्फ इंप्रूवमेंट / शिखर चंद जैन

अमित ने अपने कुलीग मुकुंद से जब निराश होकर कहा, 'यार, काम तो हम भी कम नहीं करते। बॉस के दिए हुए सारे प्रोजेक्ट्स टाइम पर पूरे कर देते हैं। फिर भी हम 3 साल से एक ही जगह अटके हुए हैं और यह जतिन हमेशा बाजी मार लेता है। 3 साल में उसे दो बार प्रमोशन मिल गया है। हमारी एक बार भी सैलरी नहीं बढ़ी, जबकि उसकी सैलरी दो बार बढ़ाई गई है।' इस पर मुकुंद ने कहा, 'यार तू समझता नहीं, जतिन काम करने के साथ-साथ उसका बखान भी खूब कर लेता है। यही उसका प्लस प्वाइंट है। जबकि तू चुपचाप काम करके निकल लेता है।'

मुकुंद की बात ध्यान देने वाली है। कॉर्पोरेट सेक्टर की जॉब में प्रमोशन, हार्ड वर्क के साथ-साथ खुद की अच्छी ब्रांडिंग और सही स्ट्रेटजी से मिलती है।

अपने वर्क को हाईलाइट करें: माना कि आप एक मेहनती एंप्लॉई हैं और मन लगाकर काम करते हैं। आप अपने बॉस द्वारा दिए गए कामों और जिम्मेदारियों को बखूबी अंजाम देते हैं। लेकिन इन सबके साथ सबसे जरूरी यह है कि आप जो कर रहे हैं, उसे आपका बॉस कैसे और कितना देख पा रहा है। बॉस को लगना चाहिए कि आप पूरी लगन और निष्ठा से ऑफिस का काम कर रहे हैं। आपको अपने काम का डॉक्यूमेंटेशन करना चाहिए और इसे शेयर भी करना चाहिए। टीम में हर किसी को लगना चाहिए कि आप कंपनी/संस्थान और अपने काम के प्रति समर्पित हैं।

खुद को विश्वसनीय बनाएं: प्रमोशन के लिए मेहनत के साथ लाइमलाइट में बने रहने और खुद को विश्वसनीय साबित करने की कला भी जरूरी है। जो लोग लगातार अपने एंप्लॉयर या बॉस की नजर में बने रहते हैं, उनके द्वारा जताई गई किसी भी चिंता या कंपनी की किसी भी समस्या में खुद आगे बढ़कर काम करने का साहस रखते हैं, उनके प्रमोशन की संभावना बहुत ज्यादा होती है। आपको अपने मैनेजर, एंप्लॉयर या प्रभावशाली अधिकारी के साथ बराबर टच में रहना चाहिए। उन्हें बताएं कि कैसे कंपनी से आप भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं और कंपनी की तरक्की आपकी भी जिम्मेदारी बनती है। यकीन मानिए, इन बातों का जादुई असर होगा।

अपना फ्यूचर विजन शेयर करें: याद रखें किसी भी कंपनी का मालिक या मैनेजर हमेशा अपनी कंपनी को आने वाले समय के ट्रेंड, डिमांड और चुनौतियों के लिए अपडेटेड रखना चाहता है। आपको यह फ्यूचर फोकस्ड साइकोलॉजी समझनी होगी। अगर आप अपने टीम लीडर्स को यह जताने और बताने में कामयाब रहेंगे कि आप एक अपडेटेड एंप्लॉई हैं। लगातार फ्यूचर ट्रेंड, टेक्नोलॉजी और मार्केटिंग स्ट्रेटजी सीखते, समझते रहते हैं तो आप उनकी फेवरेट लिस्ट में रहेंगे। इसके लिए आपको इनकी जानकारी रखनी होगी और उनके साथ डिसकस और शेयर करते रहना होगा। इसका फायदा यह होगा कि वे भले ही आपकी सभी बातें न मानें लेकिन आपके प्रति उनके मन में भरोसा रहेगा और वह आपको प्रमोट करते रहेंगे।

स्पॉटलाइट में बने रहें: ह्यूमन साइकोलॉजी के स्पॉटलाइट इफेक्ट को समझें। इसके तहत आपको न सिर्फ अपनी टीम बल्कि पूरे ऑफिस के कुलीग्स के बीच एक ऐसे व्यक्ति की इमेज बनानी होगी, जो मिलनसार, विनम्र और मददगार स्वभाव का है। साथ ही खुद को एक स्मार्ट टेक सेवी, मेहनती और दूरदर्शी व्यक्ति, एक प्रॉब्लम सॉल्वर के रूप में प्रोजेक्ट करें। इससे कोई आपका समर्थन करे या ना करे लेकिन कोई विरोध नहीं करेगा। आप हमेशा लोगों की नजर में रहेंगे और स्पॉटलाइट में रहेंगे। यह स्ट्रेटजी आपके प्रमोशन में मददगार साबित होगी।

एक्सट्रोवर्ट होना जरूरी: जब आप इंट्रोवर्ट होते हैं, तो आपके बॉस के मन में आपको लेकर क्लेरिटी नहीं रहती है। आप चाहे जितने भी मेहनती क्यों न हों, उनकी नजर और उनके मन से आपका नाम हट जाता है। सुबह से शाम तक अपने ही केबिन में या अपनी चेयर पर न बैठे रहें। ऑफिस में आपको एक्टिव और विजिबल रहना चाहिए और दिन में एकाध बार बॉस या टीम मैनेजर से मिलना चाहिए। आपका स्मार्ट होना और दिखना दोनों जरूरी है। *

न्यू ट्रेंड / संध्या सिंह

आज घर के भीतर से लेकर बाहर हर कहीं बड़ी संख्या में टीनएजर्स और यंगस्टर्स हेडफोंस या ईयरबड्स लगाए देखे जा सकते हैं। इसका ट्रेंड बढ़ने की वजहों पर एक नजर।

यंगस्टर्स के स्टाइल स्टेटमेंट हेडफोंस और ईयरबड्स

हालांकि कोई बिल्कुल सटीक डाटा तो उपलब्ध नहीं है कि देश में कितने युवा हेडफोंस और ईयरबड्स का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन एक अनुमान के मुताबिक शहरों में रहने वाला हर दूसरा यंगस्टर और गांव में रहने वाला हर चौथा युवा, हेडफोन या ईयरबड का इस्तेमाल कर रहा है। जहां तक इसके इस्तेमाल के वैश्विक आंकड़े की बात है तो एक अध्ययन के मुताबिक साल 2023 के अंत में करीब 1 अरब टीनएजर्स और यंगस्टर्स, ईयरबड्स का इस्तेमाल कर रहे थे। दिल्ली, मुंबई, बैंग्लुरु, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद और चंड़ीगढ़ जैसे महानगरों में देखें तो लगता है, घर से बाहर जाने वाला हर युवा कान में ईयरबड्स या हेडफोंस लगाकर रखता है।

वजहें हैं कई: हेडफोंस और ईयरबड्स को लेकर विश्व स्तर पर हुए अनेक अध्ययनों का निष्कर्ष यह है कि भारत या दुनिया के सभी हिस्सों में किशोरों और युवाओं के बीच इस कदर हेडफोंस और ईयरबड्स को लेकर बढ़ा लगाव, महज उनके संगीत प्रेम तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके पीछे कई तरह के दूसरे सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक कारण हैं। आइए, एक-एक करके इन्हें समझने की कोशिश करते हैं।

संगीत प्रेम: निःसंदेह आज की युवा पीढ़ी पिछली शताब्दी की कई पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा संगीत प्रेमी है। आज की युवा पीढ़ी संगीत को अपनी भावनाओं और व्यक्तित्व के साथ जोड़ती है। ये हेडफोंस और ईयरबड्स, उन्हें अपने पसंदीदा गानों को बिना किसी रुकावट और दूसरों को बिना डिस्टर्ब किए सुनने का अनुभव देते हैं, क्योंकि इनके जरिए युवा ऑन डिमांड म्यूजिक विभिन्न एप्स और म्यूजिक चैनलों के जरिए सुन सकते हैं।

फैशनेबल लुक: ईयरबड्स और हेडफोंस आज की तारीख में यंगस्टर्स के फैशन स्टेटमेंट का हिस्सा भी बन गए हैं। एप्पल एयरपोड्स, बोएट और जेबीएल जैसे ब्रांड्स ने ईयरबड्स और हेडफोंस को कहीं ज्यादा स्टाइलिश और ट्रेंडी बनाया है। इसके साथ महंगे ईयरबड्स या हेडफोंस का इस्तेमाल करना युवाओं के लिए एक स्टेटस सिंबल भी बन गया है।

वर्चुअल इंटरेक्शन: वायरलेस टेक्नोलॉजी ने कनेक्टिविटी को बेहद आसान और बिना किसी तरह की परेशानी वाला बना दिया है। ब्लू टूथ की सुविधा ने सचमुच इस दौर में लोगों को भीड़ में अकेला कर दिया है। यही नहीं शोरगुल भरे परिवेश में भी न्वॉयज कैंसिलेशन जैसे फीचर्स ने म्यूजिक को पहले से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है। यही कारण है कि आज लोग चलते-फिरते अपने दूसरे कामों को बाधित किए बिना म्यूजिक का आनंद ले रहे हैं। साथ ही साथ तकनीकी सुविधाओं की वजह से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जो वीडियो सामग्री की सुविधा बढ़ी है, उसके चलते भी ईयरबड्स की मांग बढ़ गई है।

पर्सनल स्पेस और प्राइवेसी: बहुत से युवा सार्वजनिक स्थानों पर असहज महसूस करते हैं, इसलिए वे ऐसी जगहों पर अपने पसंदीदा म्यूजिक के साथ रहना पसंद करते हैं और यह तभी संभव है, जब अच्छी क्वालिटी के ईयरबड्स और हेडफोंस की उन्हें सुविधा हो। जो यंगस्टर्स, कई तरह के गैजेट्स के प्रति लगाव रखती है, उनके लिए ईयरबड्स भी एक गैजेट ही है। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स में इनका क्रेज बढ़ता जा रहा है। *

होते हैं कई नेगेटिव इफेक्ट्स

भले हेडफोंस और ईयरबड्स का शौक यंगस्टर्स को बहुत भाता हो, लेकिन इसके बहुत सारे नुकसान भी हैं। लगातार हेडफोंस और ईयरबड्स का अगर हम 85 डेसिबल से अधिक ध्वनि के साथ इस्तेमाल करते हैं तो डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के अनुसार यह कानों की सेहत के लिए बेहद खतरनाक है। युवाओं के साथ समस्या यह है कि वो जरूरत से ज्यादा ऊंची आवाज में ही म्यूजिक सुनते हैं। इसलिए यह शौक उन्हें धीरे-धीरे बहरेपन या टिनिट्स समस्या की तरफ ले जा सकता है। इसका एक नुकसान यह भी है कि अकसर ईयरबड्स और हेडफोंस से लैस होने के कारण आजकल युवा, लोगों से बातचीत बहुत कम करते हैं, इस तरह उनका सोशल इंटरेक्शन बढ़ रहा है। कानों में लगातार ईयरबड्स पहनने से नमी बनी रहती है, जिस कारण यहां बैक्टीरिया पनपने का खतरा भी हर समय बना रहता है। कानों में दर्द, जलन, माइग्रेन और सिरदर्द की भी समस्या बढ़ सकती है।

खास मुलाकात / पूजा सामंत

मां बनने के बाद यामी गौतम फिल्मों में फिर से एक्टिव हुई हैं। नेटफ्लिक्स पर उनकी फिल्म 'धूम धाम' रिलीज हो चुकी है। इस फिल्म में उनका रोल उनके नेचर से एकदम अपोजिट है, गाली-गलौज करने वाला। यामी के लिए यह रोल कितना चैलेंजिंग रहा? अब उनके पास कैसे रोल आ रहे हैं? खुली बातचीत यामी गौतम से।

अब मुझे स्ट्रॉन्ग कैरेक्टर ऑफर हो रहे हैं : यामी गौतम

यामी गौतम सिर्फ खूबसूरत एक्ट्रेस ही नहीं हैं, वह एक सुलझी हुई और अच्छी एक्ट्रेस भी हैं। उन्होंने अपनी फिल्मों 'आर्टिकल 370', 'काबिल', 'उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक', 'चोर निकल के भागा', 'विकी डोनर' और 'दसवीं' में यह सिद्ध भी किया है। निर्माता-निर्देशक आदित्य धर से विवाह के बाद एक बेटे की मां बनीं यामी एक बार फिर फिल्मों में एक्टिव हुई हैं। हाल ही में उनकी फिल्म 'धूम धाम' नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है। फिल्म में यामी ने 'नेवर बिफोर अवतार' में खुद को पेश किया है। पेश है यामी गौतम से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

इस शुक्रवार नेटफ्लिक्स पर आपकी फिल्म 'धूम धाम' रिलीज हुई है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताएं।

इस फिल्म की कहानी बड़ी मजेदार है। इसे मेरे पति आदित्य धर ने लिखा है। इसे डायरेक्ट किया है ऋषभ सेठ ने। फिल्म में मेरे किरदार का नाम है कोयल चड्ढा, जिसकी शादी वीर पोद्दार (प्रतीक गांधी) से होती है। फिल्म में हमारी अरेंज्ड मैरिज होती है। हम एक-दूसरे के लिए बिल्कुल मिस-मैच्ड हैं। हमारी सोच, हमारी बोली, हमारे स्वभाव, हमारी आदतों में कोई समानता नहीं है। शादी के बाद ससुराल पहुंची कोयल और उसके पति वीर के बीच कैसी नोक-झोंक होती है, उनके कल्चरल डिफरेंसेस किस हद तक पहुंचते हैं, यह देखना दर्शकों के लिए काफी एंटरटेनिंग होगा।

फिल्म 'धूम धाम' में प्रतीक गांधी के साथ यामी गौतम

इस फिल्म में आपका किरदार जमकर गालियां देता है। पर्सनल लाइफ में गाली क्या, ऊंची आवाज में बात तक नहीं करतीं आप। ऐसे में कोयल चड्ढा जैसा अपोजिट किरदार निभाना आपके लिए कितना चैलेंजिंग रहा?

'धूम धाम' में कोयल का किरदार है ही ऐसा। वह स्ट्रेट फॉरवर्ड है, आज के जमाने की है, जो अपनी बोलचाल, व्यवहार में कोई शालीनता या मर्यादा नहीं रखती। वह अपने मन की रानी है, बहुत ही साहसी भी है। वक्त पड़ने पर वो हाथा-पाई भी कर लेती है। वह अपनी डेली लाइफ में गाली-गलौज करती है। गालियां देना उसकी आदत में है। कोयल को गलियां देने में कोई संकोच नहीं है। फिल्म 'धूम धाम' के कैरेक्टर की डिमांड के अनुसार मुझे गाली देनी थी। कोयल और मेरी पर्सनालिटी में जमीन-आसमान का फर्क है, मैंने अपनी जिंदगी में कभी मामूली-सी भी गाली नहीं दी। मैं इसमें कंफर्टेबल नहीं फील कर रही थी। फिल्म में मेरे पति बने प्रतीक गांधी मुझे कंफर्टेबल कराने के लिए कहते थे कि वे मेरी गालियों को नहीं सुन रहे हैं, जिससे मैं कूल होकर डायलॉग्स बोल सकूं।

मां बनने के बाद आप पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ में क्या चेंज फील करती हैं?

मां बनने की खुशी को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मां बनने के बाद बायोलॉजिकल बदलाव लाजिमी हैं। इमोशनल स्तर पर भी एक स्त्री अधिक दयालु और सेंसिटिव हो जाती है। जहां तक प्रोफेशनल लाइफ की बात है, मां बनने के बाद एक एक्ट्रेस को अगर फैमिली से सपोर्ट मिले तो वह अपने बच्चे को वक्त देने के साथ-साथ अपने करियर पर भी फोकस कर सकती है। मां बनने के बाद मेरी जिंदगी में करियर के लिहाज से भी बहुत पॉजिटिव चेंज आए हैं। इन दिनों मेरे पास ऐसी फिल्मों के ऑफर आ रहे हैं, जो पहले कभी नहीं आए थे। मुझे अब पहले के मुकाबले स्ट्रॉन्ग कैरेक्टर यानी मीनिंगफुल वूमेन ओरिएंटेड रोल मिल रहे हैं। मेरी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ अब 360 डिग्री बदल चुकी है। मैं इसे सुखद बदलाव मानती हूं।

निर्माता-निर्देशक आदित्य धर के साथ आपने शादी से पहले भी फिल्म की है। अब वह आपके पति हैं, तो उनके साथ प्रोफेशनली कितना कुछ बदला है?

मैंने आदित्य के साथ 'उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक' फिल्म में पहली बार काम किया। इस फिल्म के दौरान हम एक-दूसरे के प्रति कुछ स्पेशल फील करने लगे थे। आगे चलकर हमने शादी की फिर 'आर्टिकल 370' और अब 'धूम धाम' फिल्म साथ में की है। मैं हर अच्छी स्क्रिप्ट का हिस्सा बनना चाहूंगी। फैमिली में आदित्य, उनके भाई लोकेश धर और अब मैं, फिल्म लाइन से जुड़े हैं। कई बार डायनिंग टेबल पर फिल्मों के टॉपिक्स निकलते हैं। लेकिन जब आदित्य मुझे फिल्म का रोल ऑफर करते हैं, तो वो प्रॉपर चैनल से मेरे पास आता है। मेरी मैनेजर मुझे उनकी स्क्रिप्ट सुनवाती है। कहानी, किरदार अच्छे लगें तो ही मैं उस ऑफर को एक्सेप्ट करती हूं। *

कैसे हैं पति-पिता के रोल में आदित्य धर

यामी गौतम से यह पूछने पर कि उनके पति आदित्य धर एक पति और पिता के रोल में कैसे इंसान हैं, वह बताती हैं,'आदित्य बहुत ही अच्छे पति और पिता हैं। आदित्य ग्रेट स्टोरीटेलर हैं। हमारे बेटे वेदाविद को आदित्य कहानियां सुनाते हैं। हालांकि अभी बेटा उनकी कहानियां समझ नहीं पाता है, लेकिन वो अपने पापा के हाव-भावों को निहारता है, उसे एंज्वॉय करता है। हर कहानी के साथ आदित्य बहुत प्यारे-प्यारे एक्सप्रेशंस देते हैं। मैं भी अपना काम छोड़कर पिता-पुत्र दोनों को देखती रहती हूं। आदित्य और वेदाविद के बीच जो अद्भुत, प्यार भरा रिश्ता है, मैं भी उसे महसूस करती हूं।'